खिचडी विप्लव देखा हमने

खिचडी विप्लव देखा हमने

नागार्जुन

सभावना प्रकाशन, हापुड-245101

खिचडी विप्लव देखा हमने
(कविता सग्रह)

नागार्जुन

मूल्य पच्चीस रुपये

आवरण फोटो
लक्ष्मीधर मालवीय

प्रथम सस्करण 1980

मुद्रक
सोहन प्रिंटिंग सर्विस
मोहनपार्क, शाहदरा
दिल्ली—32

KHICHDI VIPLAVA DEKHA HAMNE (Poems) By NAGARJUN
First Edition 1980 Rs 25/-

सभावना प्रकाशन
रेवती कुज, हापुड-245101

कविताओ से पहले

☐ मई, ६४ से लेकर सितम्बर, ७६ तक की अधिकाश रचनाए दो सग्रहा म सकलित की गई हैं।

☐ दोना सग्रह दो स्थानो से प्रकाशित हो रहे हैं। पहला सग्रह है 'तुम रह जाते दस साल और' और दूसरा सग्रह है 'खिचडी विप्लव देखा हमने'।

☐ इस अवधि की तीन चार डायरिया खो गई हैं। उनके मिलने की सभावना नही है। इन रचनाओ को भी यदि अभी सकलित नही कर लेते तो निकट भविष्य मे इनके नष्ट हो जाने की पूरी सभावना थी।

☐ सामयिक, उत्तरार्द्ध, पहल, जनशक्ति, जनयुग मे समय-समय पर प्रकाशित हुई रचनाओ की यहा बहुतायत मिलेगी। किंतु उल्लिखित पत्रिकाआ का पूरा पूरा उपयोग सकलन के लिहाज से अभी नही हो पाया है।

☐ हिन्दी टाइम्स (दिल्ली), शकस वीकली हिन्दी (दिल्ली), मुक्तधारा (दिल्ली) स्वाधीनता (कलकत्ता) मे प्रकाशित रचनाओ का सकलन आगे होना है। इस अवधि की कुछ और पत्रिकाए हागी, भविष्य मे उनका सहारा लिया जाएगा।

☐ बाबा के अगले दो सग्रह, 47 से 65 तक की अवधि मे रचित प्रकाशित रचनाओ के होगे। हस (इलाहाबाद), जनशक्ति (पटना), जनयुग (लखनऊ) विप्लव और नया पथ (लखनऊ), तथा सवेरा (लखनऊ), नया साहित्य (इलाहाबाद) म प्रकाशित रचनाए उन सग्रहा मे आ जाएगी।

☐ इन सग्रहा म प्रकाशित रचनाआ म गुण-तत्व की परख का दायित्व आलोचको पर रहा। मैंने अपनी सामर्थ्य के अनुसार इन रचनाआ को सकलित भर किया है। राजनीति और साहित्य के मध्य की सीमा रेखा के बार मे मुझे कुछ नही कहना है।

☐ पिछले पन्द्रह वर्षों मे लिखी गई प्रकाशित अप्रकाशित रचनाआ मे से पचासो ऐसी हैं जिन्हे इन सग्रहो मे जान बूझकर शामिल नही किया गया।

☐ पाठ भेद और अपूर्णता सम्बन्धी त्रुटियो का पता चलने पर पाठको के आभारी रहगे।

शोभाकान्त

तुम तो नहीं गयी थीं आग लगाने

तुम तो नही गयी थी आग लगाने
तुम्हारे हाथ मे तो पेट्रोल का गीला चिथडा नही था।
आचल की ओट मे तुमने तो हथगोले नही छिपा रखे थे।

भूखवाला भडकाऊ परचा भी तो नही बाट रही थी तुम!
दातौन के लिए नीम की टहनी भी कहा थी तुम्हारे हाथ मे!
हाय राम, तुम तो गगा नहाकर वापस लौट रही थी!
कधे पर गीली धोती थी हाथ मे गगाजल वाला लोटा था,
बी० एस० एफ० के उस जवान का क्या बिगाडा था तुमने?

हाय राम, जाघ मे ही गोली लगनी थी तुम्हारे!
जिसके इशारे पर नाच रहे है हुकूमत के चक्के
वो भी एक औरत है!

वो नही आयेगी अस्पताल मे तुम्हे देखने
सीमान्त नही हुआ करती एक मामूली औरत की घायल जाँघ
और तुम शहीद सीमा सैनिक की बीबी भी तो नहीं हो
कि वो तुम से हाथ मिलाने आयेगी।

1974

इन्दु जी क्या हुआ आपको

क्या हुआ आपको ?
क्या हुआ आपको ?
सत्ता की मस्ती म
भूल गइ बाप का ?
इन्दुजी इन्दुजी क्या हुआ आपको ?
बेटे को तार दिया, वोट दिया बाप को !
क्या हुआ आपको ?
क्या हुआ आपको ?

आपकी चाल-ढाल देख दग लोग है दग
हकूमती नशे का वाह वाह क्या चढा रग
सच मच बताओ भी
क्या हुआ आपको
यो भला भूल गइ बाप को !

छात्रा के नहू का चस्का लगा आपको
काले चिकने माल का मस्का लगा आपको
किसी न टोका तो ठस्का लगा आपको
अट शट बक रही जनून म
शासन का नशा घुला खून म
फूल स भी हल्का
समझ लिया आपने हत्या के पाप को
इन्दुजी क्या हुआ आपको
बेटे को तार दिया वोट दिया बाप को

बचपन म गाधी के पास रही
तरुणाई म टैगोर के पास रही
अब क्यो उलट दिया सगन की छाप को ?
क्या हुआ आपको क्या हुआ आपको

बेट को याद रक्खा, भूल गइ बाप को
इन्दुजी, इन्दुजी इन्दुजी, इन्दुजी

रानी महारानी आप
नवाबों की नानी आप
नफाखोर मेठा की अपनी सगी माई आप
काले बाजार की कीचड आप, काई आप

सुन रही गिन रही
गिन रही सुन रही
सुन रही सुन रहीं
गिन रही गिन रही

हिटलर के घोडे की एक एक टाप को
एक एक टाप को, एक एक टाप को

सुन रही गिन रही
एक एक टाप को
हिटलर के घोडे की, हिटलर के घोडे की
एक-एक टाप को
छात्रो के खून का नशा चढा आपको
यही हुआ आपको
यही हुआ आपको

1974

लाइए, मैं चरण चूमूँ आपके

देवि, अब तो कटें बन्धन पाप के
लाइए, मैं चरण चूमू आपके

जिद निभाई, डग बढाए नाप के
लाइए, मैं चरण चूमू आपके

सौ नमूने बने इनकी छाप के
लाइए, मैं चरण चूमू आपके

किए पूरे सभी सपन बाप के
लाइए, मैं चरण चूमू आपके

हो गए है विगत क्षण अभिशाप के
लाइए, मैं चरण चूमू आपके

मिट गए हैं चिन्ह अन्तस्ताप के
लाइए, मैं चरण चूमू आपके

दया उमडी गुल खिले शर नाप के
लाइए मैं चरण चूमू आप के

सिद्धि होगी, मिलग फल जाप के
लाइए, मैं चरण चूमू आपके

थक गए हैं हाथ गोबर थाप के
लाइए अब चरण चूमू आपके

खो गए लय ताल के, आलाप के
लाइए अब चरण चूमू आपके

चढ़ी आह, जमे बादल भाप के
आइए, अब चरण चूमूं आपके

देवि, अब तो कटें बंधन पाप के
लाइए, मैं चरण चूमूं आपके

1974

जयप्रकाश पर पड़ी लाठिया लोकतन्त्र की

एक और गांधी की हत्या होगी अब क्या ?
बबरता के भाग चढ़ेगा यागी अब क्या ?
पोल खुल गयी शासक दल के महामन्त्र की !
जय प्रकाश पर पड़ी लाठिया लोकत न्त्र की !

उतर चुका है रग आज भूरी दिल्ली का !
पटना आ कर टूट गया है दम दिल्ली का !
समता धाग जोड रही है नव विहार म !
वर्बरता दम तोड रही है नव बिहार म !

राष्ट्रतत्त्व चढ गया मान पर नव विहार म
जूझ गय है तरुण आन पर नव बिहार म
जन गण मन का उद्बोधन हैं नव बिहार म
लोकतन्त्र का सशोधन ह नव विहार मे !

लाख लाख ताजे कण्ठा की अभिनव हुकृति
राष्ट भारती की वीणा म अभिनव झँकृति
अश्रुतपूव प्रस्थान घोष, जनरव की जय हो !
नव-नव अकुर नयी कोपल, सबकी जय हो !

भटक गया है दग दला के बीहड वन म
कदम कदम पर सशय ही उगता ह मन म
नता क्या है निज निज गुट के महापात्र है !
राष्ट्र कहीं है शेष, नाम बस 'राज्य' मात्र है !

एक और गांधी की हत्या होगी अब क्या ?
बबरता क भोग चढेगा योगी अब क्या ?
पोल खुल गई शासक दल के महामन्त्र की !
जयप्रकाश पर पड़ी लाठियाँ लोकतन्त्र की !

•

देवी प्रतिमा चण्ड मुण्ड को लिये साथ में
हुई अवतरित, बे दूबे हैं दमा हाथ मे
लगे बैठने गद्दी पर हिटलर-मुसोलिनी
हुई मूर्छिता भारत माता ग्रामवासिनी !

मत-पत्रों को चबा गये देवी के वाहन
ऊपर-नीचे शुरू हुआ उनका आराधन
गूंगापन छा गया देश पर डर के मारे
बड़े बड़ो को भी दिखते हैं दिन में तारे

एक और गांधी की हत्या होगी अब क्या ?
बर्बरता के भोग चढ़ेगा योगी अब क्या ?
पोल खुल गयी शासक दल के महामन्त्र की !
जयप्रकाश पर पड़ीं लाठियाँ लोकतन्त्र की !

1974

/

बाघिन

लम्बी जिह्वा, मदमात दग भपक रह है
बूद लहू क उन जबडो से टपक रहे है
चबा चुकी है ताजे शिशुमुण्डो को गिन गिन
गुराती ह टीले पर बठी है बाघिन

पकडो, पकडो, अपना ही मुह आप न नोचे !
पगलायी है, जाने अगले क्षण क्या सोचे ।
इस बाघिन को रक्खग हम चिडियाघर मे
एसा जतु मिलगा भी क्या त्रिभुवन भर म !

क्राति सुगबुगाई है

क्राति सुगबुगाई है
करवट बदली है क्राति ने
मगर, वह अब भी उसी तरह लेटी है
एक बार इस ओर देखकर
उसने फिर स फेर लिया है
अपना मुह उसी ओर
"सम्पूण क्राति" और "समग्र विप्लव' के मजु घोष
उसके काना के अ दर
खीज भर रह है या गुदगुदी
—यह आज नही, कल बतला सकूगा !
अभी तो देख रहा हूँ
लेटी हुई क्राति की स्प दनशील पीठ
अभी तो इस पर रेंग रह हैं चीट
वे भली भाति आश्वस्त है
इस उथल-पुथल म
एक भी हाथ उन पर नही उठेगा
चलता रहेगा उनका ध धा
वे अच्छी तरह आश्वस्त हैं
वे क्राति की पीठ पर मजे मे टहल कूल रहे हैं
क्राति सुगबुगाई थी जरूर
लेकिन करवट बदलकर
उसन फिर उसी दीवार की ओर
मुह फेर लिया है—
मोट सलाखा वाली काली दीवार की ओर !

मोटे सलाखो वाली काली दीवार के उस पार
न सुसज्जित मंच है न फूलों के ढेर
न वन्दनवार, न मालाएँ
न जय जयकार
न करेंसी नोटों की गड्डियों के उपहार
मोटे सलाखों वाली काली दीवार के उस पार
नारकीय यन्त्रणा दकर
तथाकथित अभियोग कबूल करवाने वाले
एलक्ट्रिक कण्डक्टर हैं
मोटे सलाखों वाली काली दीवार के उस पार
लटठधारी साधारण पुलिस मैन नहीं हैं
वहा तो मुस्तैद है अपनी ड्यूटी म
डी० आई० जी० रक का घुटा हुआ अधेड बबर
कमीनी निगाहों—तिहरी मुस्कानों वाला
मोटे होठों म मोटा सिगार दबाये है
वो अब तक कर चुका है
जाने कितने तरुणों का नितम्ब भजन
जाने कितनी तरुणियों के भगांकुर
करवा दिये हैं सुन्न
डलवा डलवा कर बिजली के सिरिंज
मोटे सलाखो वाली काली दीवार के उस पार
शिष्ट सभ्रान्त आई० ए० एस० आफिसर नहीं है
वहा तो हिटलर का नाती है
तोजो का पोता है
मुसोलिनी का भांजा है
दीवार की इस ओर के
कोमल कण्ठों से निकले नरम गरम नारे
वहा तक नहीं पहुँच पाते हैं
पहुच भी पायें तो बर्बर हत्यारा
अपने कानों के अन्दर गुदगुदी ही महसूस करेगा
उसे बार-बार हसी छूटेगी
सरलमति बालकों की खानदानी नादानी पर
[गत वर्ष उस बर्बर डी० आई० जी० की साली भी बैठ गई थी
बारह घण्टों वाले प्रतीक अनशन पर चौराहे के सामने

रिक्शा वाला ने कहा था "हाय, राम !
सोने की चूड़िया भी इम तमाशे म शामिल है !"]

●

मोटे सलाखो वाली काली दीवार के उस पार
अविराम चालू है यन्त्रणायें—
अग्नि-स्नान और अग्नि दीक्षा की
वहा क्रान्ति और विप्लव
तरुण शान्ति सेना वाला के
सुगंधित कम काण्ड नही हुआ करते !
मोटे सलाखो वाली काली दीवार के उस पार
काम नही आएँगे शिथिल संकल्प,
तरल भावुकता
शीतोष्ण उदवेग्न
वाक्य विन्यास का कौशल
गणित की निपुणता
कुलीनता के नखरे
मोटे सलाखा वाली काली दीवार के उस पार
कोई गुजाइश नही होगी
उत्पीडन की छाया छविया उतारन की
क्रान्ति और विल्पव का फिल्मीकरण
कही और होता होगा

●

बार बार लाखो की भीड जुटी
बार-बार सुरीले कण्ठा से लहराई
'जाग उठी तरुणाई जाग उठी तरुणाई"
बार-बार खचाखच भरा गाधी मैदान
बार-बार प्रदशन मे आए लाखो लाख जवान
बार-बार वापस गए
बार-बार जाए
बार-बार आए
बार-बार वापस गए

हवा म भर उठी इक्लाव व कपूर की खुशबू
वार वार गूजा आसमान
वार वार उमड आए नौजवान
वार-वार लौट गए नौजवान

1974

अगले पचास वर्ष और

अगले पचास वर्ष और आप जिएं
स्वस्थ प्रसन्न रहें, शांति-सुधा रस पिएं
आगे पीछे उमड़ उमड़ आएं तरुणों की टोलियां
साथ हों पुलिस जन, साथ हों चाकर
हों नहीं लाठी चार्ज, छूटें नहीं अश्रुगैस-गोलियां

अगले पचास वर्ष और
बहती रहे प्रवचन की अनाविल धारा
गुफाओं से निकलें मुनि गण, वरण करें कारा
तरुण रहें सयन,
चढ़े नहीं क्रोध का पारा
सुनहली लिखावट हो, चमके नारे पर नारा

अगले पचास वर्ष और बने रहें कूड़ा के ढेर
मगियों के जीवन में हो नहीं किंचित भी हेर-फेर
गल्ला के आढ़तिये मचाएं अधिकाधिक अंधेर
चुपचाप देते रहें पुष्ट चन्दा अबेर-सबेर
बढ़ती जाए फिर भी समग्र क्रांति की टेर

राशि राशि किसलय गुच्छित
कुसुमास्तीर्ण प्लास्टिक शर शय्या पर
लेटे रहें युगावतार पितामह भीष्म
प्रवचनरत हृदय परिवर्तनकारी
अगले पचास वर्ष और

समग्र लाभ-लोभ के अविकल अधिकारी
मुक्तहस्त दान दें टैक्स चोर तस्कर व्यापारी
करें निसकोच विदुर बुजुर्ग तरण कथा की सवारी
मस्त रह धृतराष्ट्र, चढी रहे समग्र क्रांति की खुमारी
अगले पचास वर्ष और

हा नहीं चिन्तित दाधनि, उन रहगे मार ही दन
गति रहगी सीमित, असीमित रहग फल
जड पकड लेगी शन शनै सवैधानिक तानाशाही
पडिता मौलवियों स मिलेगी उसे निरन्तर वाह-वाही
यही भारत पुत्री करेगी पूण कुबरा की मनचाही

सन्त हाग महामन्त, कुसन्त हागे उपसन्त
स्वार्थी न हागे, पर, कीर्ति की लालसा का रहगा न अन्त
ऊपर ऊपर मूक क्रान्ति, विचार क्रांति, सम्पूर्ण क्रान्ति
कचन क्रांति, मचन क्रांति, वचन क्रांति चिंतन क्रांति
फल्गु सी प्रवाहित रहगी भीतर-भीतर तरल मदिर भ्रांति

197

वो सब क्या था आखिर

दस लाख की भीड
उस दिन दिल्ली के माहौल को
कर रही थी कंपित उत्तप्त
दस लाख की भीड, उस दिन
तुम्हें अपना 'मुख' बनाकर कूच कर रही थी
दस लाख की भीड, उस वक्त
तुम्हारा स्पष्ट आदेश चाह रही थी
उस दिन पार्लमेंट के बाहरी कक्ष में
स्पीकर ने तुम्हारी अगवानी की थी
स्वास्थ्य के बारे में पूछा था
शबत पिलाया था
तुम उनके समक्ष
मुस्कुराते थे निहायत भद्रतापूर्वक
वहाँ से वापस आकर लगभग दो घंटा बोले थे
बोट क्लब वाले मैदान में वही लाखों की भीड
फिर तुम्हारे सामने थी
उस दिन मार्च की छठी तारीख थी
'लोकनायक,' उस रोज तो तुम कौन थे ?
तुम्हारा भोलापन
तुम्हारी 'लोकनीति'
सम्पूर्ण क्रांति वाले तुम्हारे सीधे खयाल
व्यापक जन क्रांति की तुम्हारी अनिच्छा
'सर्वहारा' के प्रति परायेपन के तुम्हारे भाव
अभिनव महाप्रभुओं के प्रति शक्ति संतुलन का
तुम्हारा हवाई मूल्य बोध
तुम्हारी मसीहाई महत्वाकांक्षाएं
काहिल आरामपसन्द, मतलबी, डरपोक, कपटी, क्रूर

भलेमानसों से दिन रात तुम्हारा घिरा होना
वो सब क्या था आखिर ?
समझ नहीं पाया कभी, समझ नहीं पाऊंगा
तरल आवेगों वाला अति भावुक हृदय धर्मी मैं जनकवि

1975

जाने, तुम डायन हो

जाने, तुम कैसी डायन हो !
अपने ही वाहन को गुप चुप लील गई हो !
शंका-कातर भक्तजनों के भी भी मृदु उर छील गई हो !
क्या कसूर था बेचारे का ?
नाम ललित था, काम ललित थे
तन मन धन श्रद्धा-विगलित थे
आह तुम्हारे ही चरणों में उसके तो पल-पल अर्पित थे
जादूगर था जुगानियों का, नव कुबेर चर्वण चर्वित थे
जाने कैसी उतावली है,
जाने कैसी घबराहट है
दिल के अन्दर दुविधाओं की
जाने कैसी टकराहट है
जाने, तुम कैसी डायन हो !

1975

इसके लेखे संसद-फंसद सब फिजूल है

इसके लेखे संसद फंसद सब फिजूल है
इसके लेखे संविधान कागजी फूल है
इसके लेखे
सत्य अहिंसा-क्षमा शांति-करुणा मानवता
बूढ़ों की बकवास मात्र हैं
इसके लेखे गांधी-नेहरू तिलक आदि परिहास-पात्र हैं
इसके लेखे दंडनीति ही परम सत्य है, ठोस हकीकत
इसके लेखे बंदूकें ही चरम सत्य है, ठोस हकीकत

जय हो, जय हो, हिटलर की नानी की जय हो !
जय हो, जय हो, बाघों की रानी की जय हो !
जय हो, जय हो हिटलर की नानी की जय हो !!

1975

सूरज सहम कर उगेगा

लगता है
हिन्द के आसमान म
अब सूरज सहम कर उगेगा
अपनी किरणें बिखेरेगा डरता डरता कापता कापता

लगता है
हि द के आसमान मे
ठीक दुपहर के वक्त
सूरज फ्यूज हो जाएगा
जी हाँ, वैशाख-जेठ का प्रखर प्रचड मध्याह्न
बिना ग्रहण के भी डूब जाएगा
धुन्ध के माहौल मे

लगता है
हिन्द के आसमान म
साबित सूरज भक् से निकल आएगा
फाडकर मसानी सन्नाटा बरसाती अमावस का

लगता है
हिन्द के आसमान मे
सूरज पर भी लागू होंगे
"आपातकालीन स्थिति वाले आर्डिनन्स

लगता है
हिन्द के आसमान मे
अब सूरज सहमकर उगगा

1975

यह बदरंग पहाड़ी गुफा सरीखा

देखो, यह बदरंग पहाड़ी गुफा सरीखा
किस चुड़ैल का मुह फैला है !
देखो, ये जबड़े लगते कैसे डरावने
देखो, इस विकराल वदन के अन्दर कैसे
सारा ही कानूनी ढांचा खिंचा आ रहा
संविधान का पोथा, देखो,
पूरा का पूरा ही कैसे लील रही है !
यह चुड़ैल है !
देशी तानाशाही का पूर्णावतार है
महा कुबेरों की रखैल है
यह चुड़ैल है !
मुस्काना में शहद घोलकर चुम्बन देती
दिल में तो विष कन्या वाला वही प्यार है
देशी तानाशाही का पूर्णावतार है
महाकुबेरों की रखैल है
सच पूछो तो यह चुड़ैल है—
मारे भण्डे चबा रही है
सूरज चांद सितारे सबको चाप रही है, दबा रही है
हलवाला-वे दलवाला के उन प्रतीक चिह्नों को यह तो लील रही है
लोकतंत्र के मानचित्र को रौंद रही है, कील रही है
सत्ता मद की बेहोशी में हांप रही है
आय बांय बकती है कैसे, देखो कैसे कांप रही है
यह चुड़ैल है !
महा कुबेरों की रखैल है !!

1975

खिचडी विप्लव देखा हमने

खिचडी विप्लव देखा हमने
भोगा हमने क्राति विलास
अब भी खत्म नही होगा क्या
पूर्ण क्राति का भ्राति विलास
प्रवचन की बहती धारा का
रुद्ध हो गया शाति विलास
खिचडी विप्लव देखा हमने
भोगा हमने त्राति विलास

मिला त्राति मे भ्राति विलास
मिला भ्राति मे शाति विलास
मिला शाति म त्राति विलास
मिला क्राति म भ्राति विलास

पूर्ण क्राति का चक्कर था
पूर्ण भ्राति का चक्कर था
पूर्ण शाति का चक्कर था
पूर्ण क्राति का चक्कर था

टूटे सीगो वाल साडो का यह कैसा टक्कर था !
उधर दुधारू गाय अडी थी
इधर सरकसी बक्कर था !
समझ न पाओगे वर्षों तक
जाने कैसा चक्कर था !
तुम जनकवि हो, तुम्ही बता दो
खेल नही था, टक्कर था !

1975

सत्य

सत्य को लक्वा मार गया है
वह लम्ब काठ की तरह
पडा रहता है सारा दिन सारी रात
वह फटी फटी आखा स
टुकुर-टुकुर ताकता रहता है सारा दिन, सारी रात
कोई भी सामने स आए-जाए
सत्य को सूनी निगाहा म जरा भी फक नही पडता
पथराई नजरा से वह यो ही दखता रहेगा
सारा सारा दिन सारी सारी रात

सत्य को लक्वा मार गया है
गले स ऊपर वाली मशीनरी पूरी तरह बकार हो गई है
सोचना बद
समझना बद
याद करना बद
याद रखना बद
दिमाग की रगा म जरा भी हरकत नही होती
सत्य को लक्वा मार गया है
और अ दर डालकर जबडा को झटका देना पडता है
तब जाकर खाना गले के अ दर उतरता है
ऊपर वाली मशीनरी पूरी तरह बकार हो गई है
सत्य को लक्वा मार गया है

वह लब काठ की तरह पडा रहता है
सारा-सारा दिन सारी सारी रात
वह आपका हाथ थाम रहगा दर तक
वह आपकी ओर दखता रहगा दर तक

वह आपकी बातें सुनता रहेगा देर तक
लेकिन लगेगा नही कि उसने आपको पहचान लिया है
जी नही, सत्य आपको बिल्कुल नही पहचानेगा
पहचान की उसकी क्षमता हमेशा के लिए लुप्त हो चुकी है
जी हा, सत्य को लकवा मार गया है
उसे इमर्जेन्सी का शाक लगा है
लगता है अब वह किसी काम का न रहा
जी हा, सत्य अब पडा रहेगा
लोथ की तरह स्प दनशू य मासल देह की तरह !

1975

अहिंसा

१०५ गाल की उम्र होगी उसकी
जान किस दुघटना म
आधी जाधी कटी थी बाहृ
झुरिया भरा ग दुमी सूरत का चेहरा
धसी धसी आखें
राजघाट पर, गाधी समाधि क बाहर
वह सवरे सवर आर आती है
जान कब किसन उस एक मृगछाला दिया था
मृगछाला क राए लगभग उड चुके हैं
मुलायम चिकनी मगछाला के उसी अद्धे पर
वो पीठ के सहार लटी
सामन अलमुनियम का भिक्षा पात्र ह
नए सिक्का और क्वटकही दुटकही नए नोटा स
करीब करीब आधा भर चुका है वो पात्र
अभी-अभी एक तरुण शाति सनिक आएगा
अपनी सर्वोदयी थैली म भिक्षापात्र की रकम डालेगा
झुक के बुढिया क कान म कुछ कहेगा
आहिस्त-आहिस्त वापस लौट जाएगा
थोडी देर बाद
शाति सना की एक छाकरी आएगी
शीशे के लब गिलास म मौसम्बी का जूस लिए
बुढिया धीरे धीरे गिलास खाली कर डालेगी
पीठ और गदन म
हरियाणवी तरुणी के सुपुष्ट हाथ का सहारा पाकर
बुदबुदाएगी फुसफुसी आवाज म—जियो बटा !
बुढिया का जीण शीण कलेवर
हासिल करेगा ताजगी

यह अहिंसा ह
इमर्जेंसी मे भी
मौमम्बी के तीन गिलास जूस मिलते है
नित्य नियमित, ठीक वक्त पर
दुपहर की धूप मे वह छाह के तले पहुचा दी जाएगी
बारिश मे तम्बू तान जाएगे मिलिटरी वाले
हिंसा की छत्र छाया म
सुरक्षित है अहिंसा
गीता और धमम्पद और सतवाणी के पद
इस बुढिया क लिए भर लिए गए है रिकाड मे
यह निष्ठापूर्वक रोज सुवह शाम
सुनती है रामधुन, सुनती है पद
'आपातकालीन सकट' को
इस बुढिया की आशीष प्राप्त है

1975

काश, क्रांति उतनी आसानी से हुआ करती

काश, क्रांतियां उतनी आसानी से हुआ करतीं।
काश क्रांतियां उतनी सरलता से सम्पादित हो जातीं।
काश क्रांतियां योगी ज्योतिषी या जादूगर के चमत्कार हुआ करतीं।
काश क्रांतियां बैठे ठाले मज्जनों के दिवा स्वप्नों-सी घटित हो जातीं।

अग्निगर्भी संकल्प
आत्मविलोपी उत्सर्ग
पावन एवं पुण्य जुगुप्सा
निर्मल करुणा
कठोर अनुशासन
अपरिसीम साहस
अनवरत अध्यवसाय
यही तो कुछ एक तत्व हैं
यही पहुंचा देते हैं क्रांति की तलहटियों तक
शोषित निपीड़ित संघर्षशील मानव समुदाय को
कुंभ के मेले में
तीर्थराज प्रयाग की ओर अभिमुख
लाखों-लाख की गतानुगतिक 'भेड़िया धसान' भीड़
लगा-लगाकर डुबकी संगम' के 'जादुई' जल में
वापस आ जाती है अपने-अपने ठौर पर
नहीं नहीं वैसा कुछ नहीं हुआ करता
विप्लवी वह्नि-स्नान में शामिल होने की प्रक्रिया में
वहां व्याकरण-सम्मत प्रांजल भाषा में घटा प्रवचन झाड़ने वाला
बना-ठना कोई युग पुरुष नहीं हुआ करता
वहां हजारों-हजार की कीमत वाले विदेशी कैमरे नहीं चमका करते
वहां अमरीकी या जापानी या फ्रेंच टेपरिकार्डर नहीं हुआ करते
नहीं नहीं वहां यह सब कुछ नहीं होता

1974

चन्दू, मैंने सपना देखा

चन्दू मैंने सपना देखा उछल रहे तुम ज्यों हिरनौटा
चन्दू, मैंने सपना देखा, अमुआ से हूं पटना लौटा
चन्दू मैंने सपना देखा, तुम्हें खोजते बद्री बाबू
चन्दू, मैंने सपना देखा, खेल कूद में हो बेकाबू

चन्दू मैंने सपना देखा, कल परसों ही छूट रहे हो
चन्दू, मैंने सपना देखा, खूब पतंगें लूट रहे हो
चदू, मैंने सपना देखा, लाए हो तुम नया कलेंडर
चदू मैंने सपना देखा, तुम हो बाहर, मैं हूं बाहर
चदू, मैंने सपना देखा, अमुआ से पटना आए हो
चदू, मैंने सपना देखा, मेरे लिए शहद लाए हो

चदू, मैंने सपना देखा, फैल गया है सुयश तुम्हारा
चदू मैंने सपना देखा, तुम्हें जानता भारत सारा
चदू, मैंने सपना देखा, तुम तो बहुत बड़े डॉक्टर हो
चदू, मैंने सपना देखा, अपनी ड्यूटी में तत्पर हो

चदू, मैंने सपना देखा, इम्तिहान में बैठे हो तुम
चदू मैंने सपना देखा, पुलिस-यान में बैठे हो तुम
चदू, मैंने सपना देखा, तुम हो बाहर, मैं हूं बाहर
चदू मैंने सपना देखा, लाए हो तुम नया कलेंडर

1976

लालू साहू

शोक विह्वल लालू साहू
अपनी पत्नी की चिता म
कूद गया
लाख मना किया लोगा न
लाख-लाख मिन्नतें की
अनुरोध किया लाख लाख
लालू ने एक न सुनी
६३ वर्षीय लालू ६० वर्षीया पत्नी की
चिता म अपन को डालकर सती हो गया
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एफ० एस० वाकर ने आज
यहा बतलाया—
लालू सलेमताबाद क निकट बधी गाव का रहन वाला था
पत्नी अर्से स बीमार थी
लालू न महीना उसकी परिचया की
मगर वो बच न सकी
निकटवर्ती नदी के किनारे चिता प्रज्वलित हुई
दिवगत की लाश जलने लगी
लालू जबरन उस चिता मे कूद गया
लालू की काया बुरी तरह झुलस गई थी
लोगा न खीच खाचकर उसे बाहर निकाला
मगर लालू को बचाया न जा सका
थोडी दर बाद ही उसके प्राण पखेरू उड गए
पीछे—
मृत लालू का शव भी उसकी पत्नी की चिता मे ही
डाल दिया गया

पीछे—
पुलिस वालों न लालू के अवशेषों को
अपने कब्जे म ले लिया
इस प्रकार एक पनि उस रोज 'सती हो गया'
और अब दिवगत पति (लालू साहू) के नाम
पुलिस वाले केस चलाएगे
क्या इस हमदद कवि को तथाकथित अभियुक्त के पक्ष मे
भावात्मक साक्ष्य देना होगा बाहर जाकर ?

1976

सिके हुए दो भुट्टे

सिके हुए दो भुट्टे सामने आए
तबीयत खिल गई
ताजा स्वाद मिला दूधिया दानों का
तबीयत खिल गई
दाता की मौजूदगी का सुफल मिला
तबीयत खिल गई

अखिलेश ने अपनी मेहनत से
इन पौधों को उगाया था
वार्ड नम्बर १० के पीछे की क्यारियों में
वार्ड नम्बर १० के आगे की क्यारियों में
ढाई महीने पहले की अखिलेश की खेती
इन दिनों अब जाने किस किस को पहुँचा रही है सुख
बीसियों जने आज अखिलेश को दुआ दे रहे हैं
सिके हुए भुट्टों का स्वाद ले रहे हैं—
डिस्टिक्ट जेल की चहरदीवारियों के अन्दर
इन क्यारियों में अखिलेश अब सब्जियाँ उगाएगा
वह किसी मौसम में इन्हें खाली नहीं रहने देगा
श्रम का अपना सुफल वो
जाने किस किस को चखाएगा
वो अपना मन ताश और शतरंज में नहीं लगाएगा
हममें से जो बातूनी और कल्पना प्रवण हैं
वे भी अखिलेश की फलित मेधा का लोहा मानते हैं—
मन ही मन प्रणत हैं वे अखिलेश की उद्यमशीलता के प्रति
पसीना पसीना हो जाते हैं तरुण
लगाते लगाते सम्पूर्ण क्रांति के नारे

फूल फूल जाती है गदनो की नसें
काश वे भी जेल के पिछवाडे क्यारियो मे
कुछ न कुछ उपजा के चले जाए
भले, दूसरे ही उनकी उपज के फल पाए।

1975

छोटी मछली शहीद हो गई

अभी अभी
छोटी मछली शहीद हो गई है
गम दूध की बाल्टी मे छलाग लगाके
अस्पताल के कर्मचारियो मे
भारी पछतावा है
बेचारी की शहादत प !
'मरी भी तो कैस !
दूध म डूब के
हाय राम, यही लिखा था उसकी किस्मत मे ?'
—मक्बूल बोला
मद्रासन सिह न कहा—
हमने तो लेकिन बडी कोशिश की
फौरन इसे ठडे पानी मे डाला
देर तक सहलात रहे पीठ और गदन
पानी उतारते रहे
बेचारी के गले के अन्दर
मगर इसके तो कपार म लिखा था
दूध की बाल्टी म डूब कर
प्राणा का विसर्जन करेगी
आह अब खाली-खाली मतबान
सूना लगता है कैसा !
बडी भागमत थी
दूध म डूबकर मरना बदा था !
कि बीच ही मे
ऊघती आवाज आई भोनी सिह की—
'आग होती तो मक्बुलवा
अभी इसी वक्त इसको भून के खा जाता

1975

बन्धु डॉ० जगन्नाथन्

सेन्ट्रल जेल गया
सेन्ट्रल जेल बक्सर
सेन्ट्रल जेल मद्रास
आगे अब आप वहाँ से भी आगे
और किस सेन्ट्रल जेल में जाएँगे
मान्यवर बन्धु डा० जगन्नाथन ?
अनागत की उस केन्द्रीयकारा का पता
न आपको है
न इनको है
कोई जरूरी नहीं है कि
आपको निकट भविष्य या दूर भविष्य में
फिर किसी सेन्ट्रल जेल की गुफा में बन्द होना ही पड़े।

नहीं, नहीं, मान्यवर बन्धु जगन्नाथन
बिल्कुल नहीं, कतई नहीं!
कतई नहीं, बिल्कुल नहीं
भवितव्यता की अथाह और अपारदर्शी झील के अन्दर
कौन सी दशा
कौन सी स्थिति या दुःस्थिति
आपका इन्तजार कर रही है —
कोई नहीं जानता।
जी, मान्यवर बन्धु जगन्नाथन, यह कोई नहीं जानता
अपना भवितव्य विनोबा भी नहीं जानते
अपना भवितव्य जे० पी० भी नहीं जानते
अपना भवितव्य इन्दिरा भी नहीं जानती
आप और हम और जगन्नाथ मिश्र और करुणानिधि
—कोई नहीं बतला सकेगा अपना भवितव्य
अपनी अनागत दशा के बारे में किसी को मालूम नहीं

जी, मायवंधु जगन्नाथन्, बिलकुल ठीक कहता रहा हूँ
हम में से कोई देवन नहीं है
देवकान्त बरुआ भी नहीं
अभिनव भी नहीं
कोई भी नहीं
माओत्से तुङ् भी नहीं
जी हाँ, मायवंधु जगन्नाथन जी हाँ !
हम में से कोई ज्योतिषी नहीं है
नजूमी नहीं है कोई हम में से
जी हाँ, कोई देवन नहीं है कहीं !

ओह भाई जगन्नाथन,
चार रोज यहाँ रहकर
आप तो अब जा रहे हैं अपनी मातृभूमि में
आप तो जा रहे हैं अपनी पितृभूमि में
तमिलनाडु की अपनी उग्र जन्मभूमि में आप वापस जा रहे हैं
जहाँ आप बिल्कुल मुक्त होंगे
करुणानिधि कुछ भी हो
आखिर तो वह आपका सगा भाई है
वह आप पर लागू नहीं रहने देगा
यह मीसा
यह आसुका
मद्रास से ट्रल जेल में ज्यादा से ज्यादा आप दो रोज रहेंगे !
जी हाँ, अधिक से अधिक दो दिन और एक रात
करुणानिधि को चीफ मिनिस्टर नहीं हैं
जी हाँ, वो श्रीयुत इंदिरा शंकर राय नहीं हैं
जी हाँ, वो इन्दिरा चरण शुक्ल भी नहीं हैं
जी हाँ वो इन्दिरा देव जोशी या इन्दिरानाथ मिश्र भी नहीं हैं
बस वो तो आनरेबुल चीफ मिनिस्टर करुणानिधि हैं
और हमें भली भाँति मालूम है
कि करुणानिधि तो मात्र करुणानिधि है
जी हाँ, मायवंधु जगन्नाथन !

नमस्कार भाई जगन्नाथन
अलविदा ! अलविदा !! अलविदा !!!

हम फिर मिलेंगे
और जरूर मिलेंगे
तजौर के भूमिहीन खेत मजदूरों के बीच ही
जब मैं आपको देखना चाहूगा
तमिलनाडु म ग्रामाचल ही आपके लीला निकेतन रहे न ?
मैं निश्चित ही आप से वहीं मिलूगा

क्या
बोधगया के दारोगा ने आपके बदन पर घूसे जमाये थे
उस बदतमीज पुलिस अधिकारी न आपको गालिया दी थी
मा यबन्धु जगन्नाथन
फिर भी आप हमेशा याद रखेंगे
फल्गु नदी के उन बलुआही ग्रामाचलो को
वहा के गरीब खेतिहर और अकिंचन खेत-मजदूर
बहन कृष्णम्मा और आपको
सचमुच के मा बाप मानते हैं
भूमि कुमार को और सत्या को
अपने सगे भाई बहन की तरह प्यार करते हैं
—ललन न मुझे बतलाया है यह सब
गणेश शर्मा ने मुझे बतलाया है यह सब
दर-असल आपस तो मेरी बात ही नहीं हुई
इन दिनों हम जब भी मिले
एक-दूसरे की ओर भर-भर आख देखते ही रह गए
पहले हमने
एक दूसरे के बारे म सुना ही सुना था
अब हमने एक दूसरे को आमने सामने पाया
भली भाति देखा एक दूसरे को हमने
भाई जगन्नाथन फिलहाल यही क्या कम रहा ?

और अब मैं निकट भविष्य म ही
तमिलनाडु पहुचूगा
आपके साथ घूम घूमकर देखूगा उधर के ग्रामाचल
आपके साथ ही बैठकर
किसान परिवारों के बीच

ओतप्पम् का नाश्ता करूगा
काली कॉफी के घूट भरूगा
चुस्किया लूगा नीबू वाली चाय की
बिना कत्थे के पान का बीडा मुह के अन्दर घुलता रहेगा
पान के उस पत्ते मे गुलाबी चूना लगा होगा
कच्चे नारियल की बुकनी और
कच्ची सुपारी की छानिया
पान के उस बीडे के अन्दर जरूर होगी
और तमिल के सौ शब्द तब
मेरी इस वाणी में अलकार बन चुके रहगे
भाई जगन्नाथन, क्या वे सौ शब्द पर्याप्त न होगे ?

हाय राम, 'इस्कोट' नही आना है
और आपका तमिलनाडु का तबादला रका है
जाने, कब तक इस्कोट की व्यवस्था होगी।
जाने कब तक आप मदुराई जेल पहुचाए जाएगे।
जाने कब तक आप वहा की जेल मे मुक्त होगे।
जाने कब तक आप यहा स जाएगे।
हम अब आपको यहा एक मिनट भी देखना नही चाहते
हा, जगन्नाथन् साहब !
समझ म नही आता, अब आप क्या हैं यहा ?
उत्तर भारत के गगा-तटवर्ती इस केन्द्रीय कारागार म
मध्य जनवरी का जाडे का यह मौसम
आपको जरा भारी पड रहा है जगन्नाथन
दक्षिणा पथ के समुद्री उपकूला वाल
सम-शीतोष्ण जनपद रामनाडु की आपकी काया
इन दिना यहा किस कदर सिकुडी रहती है।
गनीमत है कि सुबह शाम
काफी काफी देर तक आप यौगिक आसन करते हैं
दिन के वक्त चार चार छै छै घट
खुली धूप म बठे रहत हैं
गनीमत है कि आपकी तन्दुरुस्ती अच्छी है—
गनीमत है कि सवर सवर आप रोज नहात हैं

गनीमत है कि धीरज का पतवार आपका दुरुस्त है अब तक
जी हा, सरकारी मेहमानदारी के तहत
हमारा यह मिलना 'महज मिलन' की पुलकन से
बिल्कुल ही अछूता रहा !
मगर वह तो हमारे बूते की बात नहीं है
हम तो बस यू ही मिल गए हैं इस जेल मे
हम तो बस यू ही बिछुड जाएगे
मिलन और विछोह यहा क्या हमारे हाथो म है ?

फिलहाल तो मैं इतना भर चाहता हू
तहेदिल स मानता हू
कि जल्द से जल्द आपको ये तमिलनाडु पहुचा दें
मद्रास से भी आगे जाना है न आपको ?
मदुराइ डिस्ट्रिक्ट जेल न ?
आपने अभी कल बतलाया
छूटकर बम्बई जाएगे आप
वहा जसलोक अस्पाल म जे० पी० से मिलेंगे
और फिर पवनार पहुचकर
विनोबा स भी मिलेंगे आप
जी हा मान्यवर ग्घु जगन्नाथन
आप उन दोनो से ही मिलिए
जरूर मिलिए जे० पी० स
विनोबा से भी जरूर मिलिए
लेकिन ध्यान रहे—
सवप्रथम आपको श्री करुणानिधि से मिलना है
और यह भी ध्यान रहे—
कि फिलहाल आपको बोधगया नही लौटना है
यानी बिहार की सीमा से अलग ही रहिएगा
जी हा, मान्यवर घु जगन्नाथन् !
आपातकालीन आर्डिने स की अवधि के
खत्म होने का इतजार जरूर कीजिएगा
प्लीज बोधगया न आइएगा फिलहाल
बल्कि हमी तमिलनाडु पहुँचकर आपसे मिल लेंगे ।

नेवला

कौन नही लाड लडाना चाहता है इससे ?
कौन नही गोद म उठा लेना चाहेगा इसको ?
कौन नही खुश होता है
इसकी आखो म आखें डालकर ?
जम्बू, जगूरा मोतिया दुनमुआ
जाने कितने नाम मिल गए है इसे ।
—हम सारे ही बाशिदो का
बडा ही लाडला खिलौना है यह तरुण नेवला

एक बार मोतिया ने
मेरी नाक की नोक मे
गडा दिए थे अपने दात—
नही वो गुस्से मे नही था
वह लाड लडाने के मूड मे था
लेकिन मैं तो उस दुपहरी मे
लेटा था झपकिया ले रहा था
मैं कतई नही था खिलवाड के मूड म
सो शैतान ने
अपने पैने दात गडा दिए थे
इस बूढे बदर की नाक की नोक पर
बडा ही गुस्सा आया था
खैर, खराच वराच नही पडी थी
पीछे सुदामा से बतलाया तो उसने ठहाके मारे
फिर देर तक मैं भी हसता रहा था ।
अखलाक को मालूम हुआ
अखिलेश (पाडे) को मालूम हुआ
दीना और मुद्रिका को मालूम हुआ

हसते हसते सभी के पटा म बल पड गए !
मैं खुद भी हसता रहा था देर तक
खैर, खराच-वराच नही आयी थी !

तू रह-रहकर कहा गुम हो जाता है ?
हफ्ता-हफ्ता, दस दस रोज गायब रहता है !
देख जमूरे, तेरी आवारगी वहद खलती हैं हमे
अब तुझ पर पिटाई पडन ही वाली हे मोतिया !
हा, बतलाए दे रहा हू
अब कोई तुझे माफ नही करेगा—
अच्छा, बतता तो भला !
कहा-कहा रहा पिछले दिनो ?
जेलर के क्वाटर म यानी आनन्दी प्रसाद के घर मे ?
यानि मजर बाबू के उस छोटे क्वाटर मे ?
बोल बे, कहा रहा इतने दिन ?
च्चु च्चु च्चु च्चु । आ आ आ आ
मोतिया ओ ओ ओ
मोतिया ! मोतिया !!
हा, इसी तरह बडो की वात मानते हैं—
इसान तो क्या, हैवान तक निगाह भुकाकर
करीब सरक आते हैं हा, इसी तरह गर्दन भुका देते है
हा, इसी तरह !
बिल्कुल इसी तरह—
कम से कम घटा भर तो अभी आराम कर ले
इस बूढे बन्दर की गोद म !

असलाक, असलाक !
ये देखो, मोतिया मेरी गोद म लेटा है
जान कितना थका है आज !
सारे दिन जाने कहा-कहा के चक्कर लगाता रहा है
असलाक, लाओ तो प्लेट मे खीर
हाँ, देखना चार-पाच चम्मच से ज्यादा न डालना !
क्या होगा गरऊ को ज्यादा खीर चटाकर ?
ओह नहीं असलाक, मेरा मतलब यह नहीं था

जरी सी इत्ती सी खीर।
अमा, तुम तो भारी किरपिन हो यार
थोडी-सी और डालो वेट !
'जमूरे को पाकर
अपनी पीली लुगी सभालते सभालत
मुस्कुराकर बोला अखलाक
बेहद सेंटिमेंटल हो उठते है बावा आप तो !
और, इधर—
प्लेट म चम्मच की खटपट सुनते ही
मोतिया ने लगाई छलाग !
खीर अभी बिल्कुल गम है
पतीला अभी बिल्कुल गर्म है
पतीला चूल्हे से उतारकर रख गया है रामवचन
ताजा-ताजा दूधिया भाप
हवा मे घुल उठा है

मोतिया भली भाति टेड है
गर्मा गम खीर को वो अपनी चगुल से
नीचे सिमट वाली फश पर बिखेर चुका है
चप चप चप चप   शप शप शप शप
चाट रहा है खीर मोतिया जल्दी जल्दी म
जाने कैसी हडबडी म है वो
जान कितना भूखा है वो
चगुल से बिखेर बिखेर कर फश पर खीर
शपाशप-चपाचप चाट रहा है
उसकी यह फुर्ती दखत ही बनती है
रामवचन सुदामा मुद्रिका, अखिलेश पाडे
मोहनिया बाबू नौशाद अखलाक,
दसई, हवेदू बमा सलीम—
मोतिया के इद-गिद आके जमा हो गए है
कमर म झटका देता हुआ सुदामा
और दो कलछी खीर निकाल ले आता है
'ओह ! ओह ! च्च-च्च च्च
'बडा मुगयल मालूम पडता ह जमूरा

खा र खा ! तेरे खातीर
बाबा आज खीर-पाटी दे रह हैं
अरे, हमारे इस तीन नम्बर वाड मे
निनह खीर घुटती ह ाम को तो
ब्वा रे ब्वा, क्वा रे क्वा जमूरा मेरे।
सुदामा कहता है ?
लगता है कई दिन बाद आज
जमूरे को खीर का 'सवाद' मिला है—
मगर जमूरे, ाज तरे को सारी रात हम
मिसा-न्दी बना के रक्खेंगे
सवेरे चार-पाच बजे रिहा करेंगे
क्या बाबा जमूरे को अभी भागन देंगे ?
जो हुक्म होगा आपका, वही न करेंगे हम

जब होली के दिन आ गए
शाम को पाच बजे स ही मच्छरो का हमला शुरू हो जाता है
अल सुबह तक उनकी कारस्तानी चलती रहती है
लेकिन मोनिया है कि इन मच्छरो से सुरक्षित ह
अभी रात के दो बजेंगे—
मगर देखो तो शतान किस कदर
सुख की नीद सो रहा है
अखलाक की मसहरी के अन्दर
बसुध-बखबर नीद खीच रहा है !
इसे क्या पवाह है इन साले मच्छरा की।
रात्रिशेष म, ठीक पाच बजे, मोनिया बाहर निकल भागेगा
यानि आधा घटा पहले ही
अपनी पतली थूयन घुमढकर मसहरी मे सरकेगा
मलाया की फाक मे बरामदे म पहुचेगा
और फिर नीवू की छोटी भाड से आगे होगा
अखाडे के करीब रातरानी के छोटे-नराशे पौधे के पास
यानि बगन की क्यारिया क करीब
पाखाना पशाब मे निबट लेगा
और, तब फिर, शुरू हो जाएगी जमूर की दिनचर्या
हो सकता है, वो अगले दो-तीन दिना तक

पहुच गया है लगा के छलाग
ढक्कन खोलने की कोशिश मे
केतली फश पर गिरा दी है
अखलाक के 'सुपुत्र' ने
आखिर आधा चम्मच दूध तो उस मिला ही होगा
मगर फिर इत्ती रात मोतिया भागकर गया किधर ?
देखू तो अपनी मसहरी से बाहर निकलकर
(लालटन को अन्दर रखकर लिखना पढना होता है न !)
क्या पता बिल्ली की कारगुजारी हो !
वो भी तो दूध की चटोरी होती है
अकेले क्या मोतिया ही दूध का शौकीन है यहा ?

ओह, अब मैं क्या बतलाऊ आपसे !
सचमुच यह मोतिया ही था
फश पर केतली गिराकर वही भागा है—
हा, वो सचमुच ही गायब है—
अखलाक की मसहरी के कोने म
सिरहाने की तरफ दुबककर
अभी अभी वो किस तरह सोया पडा था !
गुडी मुडी होकर, दुबककर गहरी नीद म कैसे सोया था।
आवारा कही का
अभी अभी-ग्यारह बजे, जब हम दूध ले रहे थे
अखलाक न पुलकित स्वरा मे कहा था
'बाबा, अब यह सारी रात इसी तरह सोएगा
कही नही जाएगा यहा से
मैंन अखलाक वाली लालटेन की बत्ती खूब तेज कर दी
कि शायद मोतिया नीद की खुमारी मे उठा हो
और पहलू बदलकर पायताने की तरफ जा लेटा हो
नही, वो सचमुच निकल गया है
अखलाक मसहरी क अन्दर अकला ह—
लो बेट, तुम्हारा सुपुत्र चुपचाप खिसक गया न !
अब वो कई रोज बाद तुम्हारी सुध लेगा।

अरवाह, वाह रे जमूर, वाह !
तू वापस कब लौटा पाजी ?
फिर दुबक गया अखलाक के कम्बल म !
क्या न हो, चार बजे ह तो रात नहीं भीगेगी ?
बसत-शेष जो ठहरा यह मौसम
हवा मे कसी खुनकी है !
रात के चौथे पहर का ठडा पवन—
'गुलाबी जाडा' तो भला कौन कहगा इसे ?
नही, नही अब मैं फिर लालटेन की बत्ती तेज नहीं करूगा
तेरी पूछ तो साफ साफ दिखाई दे गई है मुझे !
लेकिन, मोतिया, तू वापस कब लौटा ?
अरे वाह वाह रे जमूरे वाह !
तेरे नेचर का पूरा-पूरा पता कहा लगा सका हू अब तक—
अखलाक नौ महीना स तुझे जानता है
मुझे तो यहा एक सौ दस ही रोज हुए हैं न ?
मै नही परिचित हो सका हू उतना तुझ से।
लेकिन हा अब भाग मत जइयो सवेरे सवेरे
आज तेरे को मे मछली खिलाऊगा
एक नही दो खिलाऊगा हा, रे जमूर हा !
देखना, सुबह सुबह भाग नही जाना अब !
खीर तो खैर दुपहर बाद रोज पकती है
मगर आज भी मुद्रिका मछलिया जरूर लाएगा
कल भी लाया था, वह अक्सर लाता है मछलिया

ताजा गोश्त का लाल टुकडा
मजबूत सुतरी के छोर मे बधा है
फश स ढाई-तीन फुट ऊपर लटकाए
अखलाक न वो सुतरी ऊचे थाम रक्खी है
मोतिया बार-बार छलाग लगा रहा है
लपक रहा है बार बार गोश्त के टुकडे की ओर
पूरी ताकत लगाकर उछल रहा है
गुस्से म चीख रहा है किर किर किर !
उबाल खाकर कुलाचे भर रहा है बार बार

बीच-बीच मे जरा सी देर के लिए
बस, लम्हे भर के लिए
पल भर के लिए यानी दम पाच सकड के लिए
मोतिया दम मार लेता है
फिर पूरी ताकत लगाकर
लपकता है गोश्त के टुकडे की ओर
मगर वो कामयाब कहा हुआ ?
यह खेल क्या देर तक चलना रहेगा ?
नहीं, अब खत्म होगा तो
तमाशबीन अपनी अपनी राह धरेंगे
मोतिया गोश्त का टुकडा, सुतरी सहित, लेकर
उधर रातरानी के भाड की ओट मे जा बैठेगा
लीजिए, आखिर उसने लपक ही लिया
पकड इतनी पक्की है कि वो खुद ही टग गया है
बडी मजबूती से लटका है मोतिया अधर मे
गोश्त के टुकडे मे गडे हैं उसके दात
वो हवा मे भूल रहा है
उस्ताद और जमूरे की यह नटबाजी
ढेर सारे लोगो का ध्यान अपनी तरफ खीच चुकी है

बीच मे हमने यह भी देखा, कि
उछल-कूद म तिफरा होकर
वह अपने उस्ताद के कधे पर चढ गया
(ठीक इसी तरह जामुन के पेड पर चढता है गोह
छिपकली की टोह मे चुपचाप, लेकिन फुर्ती स)
कधे से बाह पर या वापस फिर कमर पर
पोजीशन जमाकर उसन गदन लबी कर ली
इस तरह बीच म ही गोश्त वाली सुतरी को
हडप लेने की कोशिश कर रहा था मोतिया

आखिर परेशान वो गरीब
फश पर दम लेने की खातिर लेट गया
उछल कूद के, अपने पतर सहज कर

(स्पंदनशून्य चेष्टाविहीन उसकी वो भूमिका
किसी सिद्ध हठयोगी की शवासन वाली मुद्रा थी क्या !)
हमने मान लिया मोनिया थककर लस्त पस्त हो चुका है
अखनाव इस पर रहम करो
अब बेचारे को ज्यादा न सताओ
गोश्त का टुकड़ा इसके हवाले कर दो
नहीं, नहीं अब यह खेल खत्म हुआ
फिर यकायक यक जमूरे ने ऊँची छलांग लगा दी
'हाई जम्प' के अपने पिछले रिकार्ड तोड़ गया
मय मुसरी के गोश्त का वो टुकड़ा उसने झटक लिया था
हमारे लाड़ले अगनाथ बाल सौ फीसदी धोखा खा गए थे
उस रोज उनका पालतू सुपुत्र उनसे २० निकला आखिर

पसन्द आएगा तुम्हे ऐसा सुदीर्घ जीवन

गिरता पडता
लडखडाता
लार की बूदो के तार टपकाता
लकवाग्रस्त, पराश्रित अपग
पसन्द आएगा तुम्हे ऐसा सुदीर्घ जीवन ?

पुरखो के सुयश का बखान करता
बचपन और तरुणाई की—
अपनी उछल कूद की डींगें मारता
प्रवचन की ओट म अपनी अकर्मण्यता को ढकता
पसन्द आएगा तुम्हे ऐसा सुदीर्घ जीवन ?

नई सततिया से ताजगी की भीख मागता
सूक्ति की चाशनी मे लपटकर
अदर की कुण्ठाए बाहर उछालता
लद्दू बनने का अचूक प्रशिक्षण देता
अज्ञ-अल्पज्ञो म बुद्धि भेद उपजाता
पसद आएगा तुम्हे ऐसा सुदीर्घ जीवन ?

लिग लौल्य
रसना रास
वासनाओ का चैतसिक चुम्बन
लालसाओ का ललित लास्य
बाहर-बाहर प्रतिष्ठा का आटोप आडम्बर
पसद आएगा तुम्हे ऐसा सुदीर्घ जीवन ?

सूक्ष्म, सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम—
चाटुकारिता के सहारे
अभिनव प्रभुओ को अनुरजित करता

पदे पदे स्वार्थ साधन परायण
अनुकूलन कला प्रवीण पदे पदे
वसुधरा को वचना का प्रशिक्षण देता
पसद आएगा तुम्हे ऐसा सुदीर्घ जीवन

आवेगहीन
उत्तापशून्य
क्रिया प्रतिक्रिया विरहित
क्रोध-अमर्ष ईर्ष्या असूया से दूर बहुत दूर
पत दर पत केंचुली मे लिपटा हुआ
पसद आएगा तुम्हे ऐसा सुदीर्घ जीवन ?

बुढापे मे
फिर से हासिल करके यौवन
क्या किया आखिर ययाति ने ?
ऋजुमति विनयावनत, आज्ञापालक पुत्र को
करके निर्वासित सुदीर्घ अवधि के लिए,
दशरथ ने चुकाई कीमत वचनपूर्ति की
रानी हुई तुष्ट। मरण ही मिला पारितोषिक
निष्ठुर नियति के उस खेल मे
महागुरु वशिष्ठ ने आखिर कौन-सी भूमिका निभाई ?

1975

प्रतिबद्ध हूं

प्रतिबद्ध हूं
सम्बद्ध हूं
आबद्ध हूं

प्रतिबद्ध हूं, जी हां प्रतिबद्ध हूं—
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त—
संकुचित स्व की आपाधापी के निषेधार्थ
अविवेकी भीड़ की 'भेड़िया धसान' के खिलाफ
अंध-बधिर 'व्यक्तियों' को सही राह बतलाने के लिए
अपने आप को भी 'व्यामोह' से बारबार उबारने की खातिर
प्रतिबद्ध हूं, जी हां, शतधा प्रतिबद्ध हूं!

सम्बद्ध हूं, जी हां, सम्बद्ध हूं—
सचर-अचर सृष्टि से
शीत से, ताप से, धूप से, ओस से, हिमपात से
राग से, द्वेष से, क्रोध से, घृणा से, हर्ष से, शोक से, उमंग से, आक्रोश से
निश्चय-अनिश्चय से, संशय भ्रम से, क्रम से व्यतिक्रम से
निष्ठा-अनिष्ठा से, आस्था अनास्था से, संकल्प विकल्प से
जीवन से, मृत्यु से, नाश-निर्माण से, शाप वरदान से
उत्थान से, पतन से, प्रकाश से, तिमिर से
दंभ से, मान से, अणु से महान् से
लघु-लघुतर-लघुतम से, महा-महाविशाल से
पल अनुपल से, काल महाकाल से
पृथ्वी पाताल से ग्रह-उपग्रह से नीहारिका जल से
रिक्त से, शून्य से, व्याप्ति-अव्याप्ति महाव्याप्ति से
अथ से, इति से अस्ति से, नास्ति से
सबसे और किसी से नहीं
और जाने किस-किस से

सम्बद्ध हू, जी हा, शतधा सम्बद्ध हू ।
रूप रस-गध और स्पर्श मे, शब्द मे
नाद मे, ध्वनि मे, स्वर से, इगित-आकृति मे,
सच मे, झूठ से दोनो की मिलावट से
विधि मे निषेध म, पुण्य मे पाप मे
उज्ज्वल मे मलिन मे, लाभ मे, हानि मे
गति मे, अगति मे, प्रगति मे दुर्गति से
यश मे कलक स नाम दुनाम मे
सम्बद्ध हू, जी हा शतधा सम्बद्ध हू ।

आबद्ध हू जी हा, आबद्ध हू—
स्वजन-परिजन के प्यार की डोर मे
प्रियजन के पलको की कोर मे
सपनीली रातो के भोर मे
बहुरूपा कल्पना रानी के आलिगन-पाश म
तीसरी-चौथी पीढियो के दतुरित शिशु सुलभ हास म
लाख लाख मुखडो के तरुण हुलास मे
आबद्ध हू, जी हा, शतधा आबद्ध हू ।

1975

खटमल

उमड़ उमड़ आए खटमल, मैं
जागा सारी रात
बिस्तर क्या था, जंगल था, मैं
भागा सारी रात
खून खींचता रहा रगों से
आगा सारी रात
अस्पताल में या हम बैठे
नागा सारी रात

अभी अभी मारा, फिर कैसे
निकला यह पाताल से
तरुण गुरिल्ला मात खा गए
शिशु खटमल की चाल से
रात्रि जागरण, दिन की निद्रा
चिपके मेरे भाल से
यम की नानी डरती होगी
खटमल के कमाल से

निकल आया फिर कहाँ से
खटमलों का यह हुजूम
मैं जरा जाता हूँ बाहर
मैं जरा आता हूँ घूम
रक्तबीजों की फसल को
मौत क्या सकती है चूम
मगर बाहर मच्छरों ने भी
मचा रक्खी है धूम

हम भी भाग छिपकलिया
भी भागी सारा रात
हम भी जागे, छिपकलिया
भी जागी सारी रात
जीत गई छिपकलिया लेकिन,
हमने मानी हार
अपने बूते सौ पचास भी
मच्छर सके न मार

जीत गई छिपकलिया लेकिन,
हमने मानी हार
अपने बूते सौ पचास भी
खटमल सके न मार

1976

खल गई होली इस साल

यहां हम निश्चित है
भर-पट खाते हैं
भर जी सोत ह
मर्जी मुताबिक बोलत-बतियात हैं
हँसते हँसत पेट म बल पड जाता है
ठहाके छटत हैं, सारा का सारा वाड गूज गूज उठता है
हमारी मुस्काना पर तो सान ही चढता रहता है यहां
फिर भी, भई, जेल तो आखिर जेल ही है न ?

अखाडा जमा रखा है हमन
सवेर-सवेरे दसिया जोडे आपस म गुथ जाते है
ठोक ठाक कर ताल 'जोर-आजमाईश' चलती है
एक एक की गदन और पीठ
पूरमपूर मिट्टी, जी हां, दो-दो किलो सोख लेती है
पुट्ठा और राना स पसीना छूटता है तड-तड-तड
घुटना से उतर कर एडिया तक पहुच जाती है पसीन की धार
तरुणाइ लूटती है यहाँ जवानी की बहार
जवानी करती है कदम कदम पर तरुणाई की मनुहार
सयाने भी नही बैठे है गुमसुम या कि बकार
वही वही सीख नइ पीढी को दे रहे है बार-बार
वो ही कहलाते है नताजी, वो ही है हमारे सिपहसालार
हम मानी पटती है उनकी झिडकियाँ उनकी फटकार
तरुणा को बहद भाते है 'कान मलाई' वाले लाड प्यार

जी हा, क्लास भी चलते हैं /
चत की तिपहरिया म ये हम बेहद सलत है
क्या करें मगर सयान तो अमूमन

हमेशा ही दिमागी खुराक पर पलते हैं
जभी तो हफ्ते मे दो बार
सयानो के लक्चर, यानी हमारे दिमाग चलते है
यू हकीकत है कि—
कथन-मथन मे ताजगी बरकरार रहे तो
सामने वालो को भी मजा आता है
समझदारी की बढती है
और, साहेब, अखरता नहीं है ऋत की तिपहरिया का हावा

होली हमे बुरी तरह खल गई इस साल
जिन नाजुक गालो पर मला करते थे गुलाल
और जिन्हे गालिया देकर होते थे निहाल
हाय वो सामने नही थे इस साल
मगर यहा भी हम—
रहने नही पाया मलाल
यहा भी हमे मिल गई थी ढोलक और झाल
हमी मे एक बन गया था छोकरी कर दिया था कमाल
बाकी, हम सभी नाचे थे उस दिन ताल-बेताल
भग भी छनी मालपुए भी कटे उडे भी गुलाल
फिर भी हमे बुरी तरह खल गई होली इस साल

1976

वेतन भोगी टहलुआ नहीं है

यह आपका वेतन भोगी टहलुआ नहीं है
यह चाकर नही है आपका
न नौकर ही है आपका
इस मुगालत म न रह हजूर
कि यह आपका 'सर्वेंट' है
नहीं हजूर यह सजायाफ्ता बंदी है
सीधा-सादा, लेकिन समझदार आदिवासी है
'आजीवन क ़ैदी' सावला सलोना युवक
जेल की सहिता के मुताबिक
इन लोगो का अपना एक अलग ही रुतबा होना है
हजूर यह आपका पनिहा जरूर है
लेकिन भृत्य नही है आपका यह
आपने पहिले ही दिन इसे
जिस तरह अपमानजनक लहजे म
सम्बोधित किया था—
वो मुझे बहद अखरा था हजूर
ठीक है, ठीक ह
आप 'आसन त्यागी' विधायक हैं
ठीक है ठीक ह
अपने क्षेत्र म आप लोकप्रिय' है
ठीक है, ठीक है
बहुपठित एव बहुश्रुत हैं
ठीक है, ठीक है
आप उच्च श्रेणी के बदी ह, विचाराधीन
ठीक है, ठीक है
महीना पन्द्रह रोज बाद हजूर
जमानत पर छूट के बाहर निकल जाएगे

मगर इस पनिहा को हुजूर
अपना खानदानी नौकर न समझें
और यह खाना-नाश्ता तन गाड़ा, सब कुछ
अपना अलग से ही पाता है
यह भी सरकारी महकमा है हुजूर
आपकी परीक्षा यह जरूर करता है
लेकिन वो तो इसे ड्यूटी मिली है
गुमटी पर बड़े जमादार के रजिस्टर में
इसकी यह ड्यूटी दर्ज है हुजूर
सजा की लम्बी अवधि में
छूट के दिनों का माफा मिलता है न हुजूर !
समझा हुजूर इसे अपनी ड्यूटी का मार्फा मिलता है !!
आप इस पनिहा को क्या देंगे ?
नीबू वाली चाय का आधा प्याला ?
चम्मच दो चम्मच हलवा ?
एक आध बाटी 'सिकार' की ?
दिन में दो एक बीड़ी ?
आप हुजूर इसको अपनी तरफ से और क्या देंगे ?
क्या दे सकते हैं हुजूर आप इसको !

1976

मुग ने दी बाँग

२ ५० (दो पचाम) पे मुग ने दी वाग
दडव मे है व द
मगर आवाज है बुन द

वह ठीक ५ वजे ब द कर दिया गया था
खैर, सात बजे तक तो सो ही गया होगा
तो क्या वो मात साढे सात घटा सोया ही रहा ?
नही, कुछ वक्त उसन चाच भी सहलाई होगी
प्रणयिनी की गदन को खुजलाया हो शायद
दडव के अ दर भला उ ह स्वच्छ द क्रीडा के अवसर तो
क्या मिले होगे ।

तो, यह सुख मुग ठीक वक्त प वाग द रहा है न ?
कल रात उसन ठीक ढाई बजे वाग दी थी
और परसा रात ठीक तीन बजे
तो, अलाम की घडी ठहरा न यह ।
यह मुग नही अलाम घडी ह जेल की
वाकइ । वाकई

1976

धज्जी-धज्जी उडा दी छोकरो ने इमर्जेन्सी की

धज्जी धज्जी उडा दी छोकरो ने इमर्जेंसी की
घूमत फिरे लगातार चार घट
गलिया म सडको पर, चौराहा तिराहा पर
अवाम ने मजा लिया
साथ साथ स्लोगन मारे
मुटिठया उछली हवा मे साथ-साथ
साथ-साथ पसीना बहा उनका-इनका
साथ-साथ पसीना सूखा इनका-उनका
सारा नगर घूम आया विरोध का काला झडा
पुलिस ने कही भी छेडखानी नही की उन से
जान दिया उन्ह
आने दिया उन्ह
लगाने दिए मनमान नारे
चाय वाला ने उस रोज पहली बार
निडर होकर तरुणा को चाय पिलाई
जे पी के बारे म पूछा बहुत कुछ जानना चाहा
पान वालो न पान के बीडे आफर किए

यह क्या हुआ छपरा टाउन मे उस रोज
धज्जी धज्जी उडा दी छोकरो ने इमर्जेंसी की
यह क्या हुआ आखिर उस दिन छपरा टाउन म !

प्रोग्राम थे। समिति की तरफ से। समूचे बिहार मे
धरना और प्रदशन और सत्याग्रह। २ ३ ४ अक्टूबर के लिए,
२२ प्रदशनकारी पहले दिन। दूसरे दिन १८,
अरेस्ट हुए, जेल आए
तीसरे दिन गिरफ्तार तो हुए सही

धज्जी-धज्जी उडा दी छोकरो ने इमर्जेन्सी को

धज्जी धज्जी उडा दी छोकरो ने इमर्जेंसी की
घूमते फिर लगातार चार घट
गलिया म, मडका पर, चौराहा तिराहा पर
अवाम ने मजा लिया
साथ साथ स्लोगन मारे
मुट्ठिया उछली हवा मे साथ-साथ
साथ-साथ पसीना बहा उनका-इनका
साथ-साथ पसीना सूखा इनका-उनका
सारा नगर घूम आया विरोध का काला भडा
पुलिस न कही भी छेडखानी नही की उन से
जान दिया उन्ह
आने दिया उन्ह
लगाने दिए मनमाने नारे
चाय वालो ने उस रोज पहली बार
निडर होकर तरुणा को चाय पिलाई
जे पी के बारे मे पूछा बहुत कुछ जानना चाहा
पान वालो ने पान के बीडे आफर किए

यह क्या हुआ छपरा टाउन मे उस रोज
धज्जी धज्जी उडा दी छोकरो ने इमर्जेंसी की
यह क्या हुआ आखिर उस दिन छपरा टाउन म !

प्रोग्राम थे। समिति की तरफ से। समूचे विहार मे
धरना और प्रदशन और सत्याग्रह। २ ३ ४ अक्टूबर के लिए,
२२ प्रदशनकारी पहले दिन। दूसरे दिन १८
अरेस्ट हुए, जेल आए
तीसरे दिन गिरफ्तार तो हुए सही

जी हा, यह सबकी चहेती है !

यह रोज फेरे लगाती है
ठीक आठ बजे सवेरे
इस वाड मे, उस वाड म और अगले वाड मे
चपातिया, भात चने मिल ही जात ह
जी हा दाल भी पी लेती है
साग-सब्जी के भी 'सवाद मालूम हैं इसे तो
दही मटठा, चीनी-गुड क्या नही चाटती है
नमक का डला मिल जाए, फिर भला क्या कहने !
अरे हा नाम तो बतलाया नही
वो तो हम भूल ही गए बतलाना
मधुमती कहते हैं इसे

जमनापारी नसल की यह गाय दो ब्यान की है
किचन वाले गोलम्बर का चक्कर लगा के लौट आएगी
फिर सारा दिन अपन बथान से बाहर नही निकलेगी
फिर कल प्रात ही 'मधुमती दशन देगी इधर
जी हा, यह सबकी चहेती है

अभी-अभी ठीक उस रोज, ठीक नौ बजे
मधुमती आ धमकी हमारे वाड मे
(गेट तो बस जरा सा खुला था
इन दिनो कडा पहरा ह न ?
मगर मधुमती पर कहीं कोई पाब दी थोडे है !)

मैं इधर दूर, रूम स बाहर खडा था
मधुमती को किचन की ओर लपकती देखकर
अच्छा लगा था, बडा ही अच्छा लगा था
वह सीधे किचन के दरवाजे तक गई
लेकिन उल्टे पाव वापस लौट पडी

1976

धज्जी-धज्जी उडा दी छोकरो ने इमर्जेन्सी को

धज्जी धज्जी उडा दी छोकरा ने इमर्जेंसी की
घूमते फिरे लगातार चार घंटे
गलियो मे सडको पर, चौराहो तिराहो पर
अवाम ने मजा लिया
साथ साथ स्लोगन मार
मुटि्ठया उछली हवा मे साथ-साथ
साथ-साथ पसीना बहा उनका-इनका
साथ-साथ पसीना सूखा इनका-उनका
सारा नगर घूम आया विरोध का काला झंडा
पुलिस न कही भी छेडखानी नही की उन से
जाने दिया उन्हे
आने दिया उन्हे
लगाने दिए मनमाने नारे
चाय वालो ने उस रोज पहली बार
निडर होकर तरुणो को चाय पिलाई
जे पी के बारे मे पूछा, बहुत कुछ जानना चाहा
पान वालो न पान के बीडे आफर किए

यह क्या हुआ छपरा टाउन मे उस रोज
धज्जी धज्जी उडा दी छोकरो ने इमर्जेन्सी की
यह क्या हुआ आखिर उस दिन छपरा टाउन म !

प्रोग्राम थे। समिति की तरफ से। समूचे बिहार म
धरना और प्रदर्शन और सत्याग्रह। २ ३ ४ अक्टूबर के लिए
२२ प्रदर्शनकारी पहले दिन। दूसरे दिन १८,
अरेस्ट हुए, जेल आए
तीसरे दिन गिरफ्तार तो हुए सही

मगर मत्रव सत्र छोड दिए गए अगली सुबह
दस-त्रारह तरुण उन्हीं म से यह थ
गुजा दिया नारा स उन्हाने समूचा ही टाउन
धज्जी-धज्जी उडा दी इमर्जेंसी की ।
घूमते फिर लगातार चार घटे

पीछे, तफसील म हमने सुनी सारी बातें
खूब हँस खूब हँस खूब हँसे
गुश हुए खूब, खुश हुए खूव खुश हुए खूब

1975

हाथ लगे आज पहली बार

हाथ नगे आज पहली बार
तीन सर्कुलर साइक्लोस्टाइल वाले
UNA द्वारा प्रचारित
पहली वार आज लगे हाथ
अहसास हुआ पहली बार आज
गत वर्ष की प्रज्वलित अग्निशिखा
जल रही है कहीं न-कहीं, देश के किसी कोने में
सुलग रही है वो आंच किन्हीं दिलों के अन्दर
'अन्डर ग्राउण्ड न्यूज एजेन्सी' यानि UNA
पक्षान कर रही है कहीं-न-कहीं !
नये महाप्रभुओं द्वारा लादी गई तानाशाही
जरूर ही पक्चर होगी

तार-तार होगी जरूर ही
जनवाद का सूरज डूब नहीं जाएगा
ग्रहन नहीं लगा रहेगा हमेशा अभिनव फासिज्म का
अहसास हुआ पहली बार आज
छपरा जेल की इस गुफा के अन्दर
ठीक डेढ बजे रात में

1975

हकूमत की नर्सरी

वज्र बनकर गिरते आए हैं
पुरानी पीढ़ियों के पाप
नई पीढ़ियों पर
नई पीढ़ियों के संकट
सुरक्षित रहे होंगे बीज-रूप में
पुरानी पीढ़ियों के अन्दर

यह कैसे होगा कि
अपनी सारी मुसीबतों के जिम्मेदार
तरुण स्वयं हों ?
यह कैसे होगा कि
अविकसित एवं अश्वेत मानव-जातियां
जहालत और गरीबी के गलित कुष्ठ
स्वयं अपनी ही परिधियों तक सीमित रख लें ?
यह कैसे होगा कि
दासों की संतान
दासता के गुणों का करती रहे बखान
अपने पूर्वजों की भांति

यह कैसे होगा कि हमारे वंशधर
उत्तराधिकार में छांट छांटकर
सिर्फ गुण ही गुण लेंगे हमसे

सारी दुनिया को हम ढोल पीट-पीट कर बतलाते हैं
हमारे पूर्वज महान थे वरेण्य थे हमारे पूर्वज
वे नहाते थे दूध की नदियों में
उनका युग हमारे इतिहास का स्वर्ण युग था
दुनिया हमसे पूछती है
तो अब तुम भीख क्यों मांगते हो ?

क्यों तुमने कोटि-कोटि जनों को 'अछूत' बना रखा है ?
एक ब्राह्मण दूसरे ब्राह्मण को अपने चौके में क्यों घुसने नहीं देता ?
भंगी क्यों नहीं डोम का छुआ पानी पीता है ?
पूर्वजों के पुण्य का तुम्हारा जादू कहां चला गया ?
दुनिया हमसे पूछती है

दुनिया हमसे पूछती है
बहुसंख्यक भारतीयों को क्या नहीं मालूम है
आजादी और राष्ट्रीयता का मतलब
दुनिया हमसे पूछती है
जापान और पश्चिम जर्मनी
लगभग गुमनाम हो गए थे
द्वितीय विश्व युद्ध के बाद
और आज, ठीक तीस वर्ष बाद
वे फिर से आगे बढ़ गए हैं
तुम जापान और जर्मनी से कब तक पीछे रहोगे
तुम्हारी तुलना में उनकी आबादी
बीस प्रतिशत है या तीस प्रतिशत
तुम जापान क्या न हुए ?
क्या न हुए तुम पश्चिम जर्मनी ?
दर असल तुम्हारे जिस्म के कुछ ही हिस्से जिन्दा हैं
दर असल तुम्हारे दिल और दिमाग के अन्दर
ढेर सा कूड़ा सुरक्षित है
दुनिया हमसे पूछती है
लोथ की अखण्डता भला किस काम की ?
पुराने रोगों के अपने ही कीटाणुओं ने ही तो
तुमको लोथ बना रखा है न ?
तमिलनाडु, बंगाल, नगाभूमि, मिजोरम, केरल
गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, कर्नाटक और आन्ध्र
इनको तुम कब तक नई दिल्ली की जमींदारी बनाकर रखोगे
क्या नहीं इन सभी प्रदेशों का 'संघ शासन
फेडरल राज्य हो, संयुक्त राज्य हो ?
क्यों नहीं सबके सब ये 'राष्ट्रसंघ' के सदस्य हों ?
अकाल ग्रस्त उड़ीसा क्यों नहीं

शान्ति, शान्ति, सम्पूर्ण शान्ति बस, मेरा एक यही नारा
अपना मठ अपने जन प्रिय हैं मुझको प्रिय अपना इकतारा
मुझको प्रिय है मैत्री अपनी, प्रिय है यह करुणा कल्याणी
अपने मौन मुझे प्यार है, मुझ को प्रिय है अपनी वाणी

दुर्जन है जो हंसते होंगे, बाबा उन पर ध्यान न देता
बकवासों का अन्त नहीं है, बाबा उन पर कान न देता
बता नहीं पाऊंगा यह मैं, मौन मुझे कितना प्यारा है
बता नहीं पाऊंगा यह मैं कौन मुझे कितना प्यारा है

आज वृद्ध हूं बचपन मे था, भोली मा का भोला बालक
महा मुखर था कभी, आज तो महा मौन का हू संचालक
सब मेरे, मैं भी हू सबका, मेरी मठिया सबका घर है
आप और हम सब नीचे हैं, सबके ऊपर परमेश्वर है

राजनीति के बारे मे अब एक शब्द भी नही कहूंगा
तकली मेरे साथ रहेगी, मैं तकली के साथ रहूंगा

सुबह-सुबह
तालाब के दो फेरे लगाए
सुबह-सुबह
रात्रि शेष की भीगी दूबो पर
नगे पाव चहलकदमी की
सुबह-सुबह
हाथ पैर ठिठुरे, सु न हुए
माघ की कडी सर्दी के सारे
सुबह-सुबह
अधमूखी पतझयो का कौडा तापा
आम के कच्चे पत्तो का
जलता, कड़ुवा कसैला सौरभ लिया
सुबह-सुबह
गवई अलाव के निकट
घेरे मे बैठने बतियाने का सुख लूटा
सुबह-सुबह
आचलिक बोलियो का मिक्सचर
कानो की इन कटोरियो मे भरकर लौटा
सुबह-सुबह

1976

बसन्त की अगवानी

रंग-बिरंगी खिली-अधखिली
किसिम किसिम की गंधों-स्वादों वाली ये मंजरियाँ
तरुण आम की डाल डाल टहनी-टहनी पर
झूम रही हैं
चूम रही हैं—
कुसुमाकर को ! ऋतुओं के राजाधिराज को !!
इनकी इठलाहट अर्पित है छुई मुई की लोच-लाज को !!
तरुण आम की ये मंजरियाँ
उद्भिद-जग की ये किन्नरियाँ
अपने ही कोमल-कच्चे वृन्तों की मनहर संधि भंगिमा
अनुपल इनमें भरती जाती
ललित लास्य की लोल लहरियाँ !!
तरुण आम की ये मंजरियाँ !!
रंग बिरंगी खिली-अधखिली

1976

इन सलाखों से टिकाकर भाल

इन सलाखा से टिकाकर भाल
सोचता ही रहूँगा चिरकाल
और भी तो पकेंगे कुछ बाल
जाने किसकी / जाने किसकी
और भी तो गलेगी कुछ दाल
न टपकेगी कि उनकी राल
याद पूछेगा न दिल का हाल
सामने आकर करेगा वो न एक सवाल
मैं सलाखा मे टिकाए भाल
सोचता ही रहूँगा चिरकाल

1976

फिसल रही चांदनी

पीपल क पत्ता पर फिसल रही चादनी
नालिया के भीगे हुए पेट पर, पास ही
जम रही, घुल रही, पिघल रही चादनी
पिछवाडे बोतल के टुकडो पर—
चमक रही, दमक रही मचल रही चांदनी
दूर उधर, बुर्जी पर उछल रही चादनी

आगन म, दूबा पर गिर पडी—
अब मगर किस कदर सभल रही चादनी
पिछवाडे, बोतल के टुकडा पर
नाच रही, कूद रही, उछल रही चांदनी
वो देखो, सामन
पीपल क पत्ता पर फिसल रही चांदनी

1976

होते रहेंगे बहरे ये कान जाने कब तक

होते रहेंगे बहरे ये कान जाने कब तक
ताम झाम वाले नकली मेघा की दहाड़ में
अभी तो करुणामय हमदर्द बादल
दूर, बहुत दूर, छिपे हैं ऊपर आड़ में

यों ही गुजरेंगे हमेशा नहीं दिन
बेहोशी में, खीझ में, घुटन में, ऊबा में
आएगी वापस जरूर हरियालियां
घिसी-पिटी झुलसी हुई दूबों में

1976

वो चांदनी ये सींखच

वो चादनी, य सीखचे
कैस गुथें, कैसे बचें
क्योंकर रुकें, क्याकर रचें
वो चांदनी, ये सीखचे

या ये घुटन, या य कुढन
फिर दूधिया माहौल वो
कसे रुचें, कैस पचें
वो चांदनी ये सीखचे
कैस गुथ, कैस बचें

1976

हरे-हरे नये-नये पा

हरे-हर नय-नये पात
पकडी न ढक लिये अपने सब गात
पोर-पोर, डाल डाल
पट पीठ और दादरा विशाल
ऋतुपति ने कर लिए खूब आत्ममात
हरे-हरे नये नये पात
ढक लिये अपन सब गात
पकडी मा सयाना वो पड
कर रहा गुप चुप ही बात
ढक लिए अपन सब गात
चमक रह
दमक रह
हिल रही-डुल रही खिल रही-खुल रही
पूनम की फागुनी रात
पकडी न ढक लिए अपने सब गात

1976

गे तरु हैं नगी डालें

नगे तरु है, नगी डालें
इन्हें कौन-से हाथ सभालें
खीझ भडकती घुटती आह
झेल न पाती इन्हें निगाह
बँदी की लगडी मनुहारें
कसे इनकी सनक उतारें
मौसम के जादू मचलेंगे
कब इनमे टूस निकलेंगे
हरियाली का छाजन होगा
आसमान कब साजन होगा

अब भी तो पतझर थक जाए
इनका नगापन ढक जाए
हरियाली इन पर झुक आए
नग्न नृत्य अब भी रुक जाए
नगे तरु हैं, नगी डालें
इन्हें कौन से हाथ सभालें !

1976

इर्द-गिर्द संजय के, मेले जुड़ा करेंगे

इद गिद सजय के, मेले जुडा करेंगे
तीन रग के सिल्कन भडे उडा करेंगे
अन्धकार ही अधकार तब छा जाएगा
बेटे का यह मोह आपको खा जाएगा

किधर नही हैं सठ, भूमिपति किधर नही है ?
कौन कहेगा, शातिर गुडे इधर नही हैं।
देवि, तुम्हारी प्रतिमा से मैं दूर खडा हूँ
छोटा हूँ, पर, उन बौनो से बहुत बडा हूँ

तुम हारो यदि, जीत जायँ यदि राजनरायन
दल मे भगदड मचे, कहे सब तुमको डायन
कोई अदना हो यदि दिल्ली का दारोगा
तब क्या होगा, तब क्या होगा, तब क्या होगा

जनकवि हूँ क्या चाटूगा मैं थूक तुम्हारी
श्रमिको पर क्यो चलने दू बदूक तुम्हारी

1976

देखो, देखो, कूटनीति मे लूटनीति की टक्कर
देखो, देखो, लूटनीति से फूटनीति की टक्कर
देखो, देखो, फूटनीति मे झूठनीति की टक्कर
देखो, देखो, झूठनीति मे कूटनीति की टक्कर
देखो, देखो, कूटनीति मे लूटनीति की टक्कर

1977

इस चुनाव के हवन-कुड से

फिर क्या उसके दिन लौटेंगे
फिर क्या वो वापस आएगी
बहकी-बहकी सी फिर क्या वो
सोशलिज्म के गुण गाएगी
फिर क्या उसके दिन लौटेंगे
फिर क्या वो वापस आएगी

कल तो बाघो पर सवार थी
पडी हुई है आज धूल मे
दिखत होगे विष के कीडे
हाय, उसे अब फूल फूल म
कल तो बाघो पर सवार थी
पडी हुई है आज धूल मे

चुपके से गाधी मुसकाया
युग की देवी हार खा गई
बछडा तो बछडा, गैया तक
अजी, मुहर की मार खा गई
चुपके से गाधी मुसकाया
युग की देवी हार खा गई

क्या क्या मनसूबा वाधा था
क्या-क्या तो देखे थे सपने
कौन कहेगा प्यारे थे बस
बहुए अपनी, बेटे अपने
क्या-क्या मनसूबा बाधा था
क्या क्या तो देखे थे सपने

सारे सपने मिले धूल मे
सारे बाल सफेद हो गए
उजडी सी लगती होगी अब
पिछले सब अरमान खो गए
सारे सपने मिले धूल म
सारे बाल सफेद हो गए

क्या-क्या मनसूबा बाधा था
क्या-क्या तो देखे थे सपने
कौन कहेगा प्यारे थे बस
बहुए अपनी, बेटे अपने
क्या क्या मनसूबा बाधा था
क्या-क्या तो देखे थे सपने

वाह, खूब थी, चखा गई है
मजे हमे हिटलरशाही के
संतो ने आशीष उडेली
छक्के छूटे गुण ग्राही के
वाह खूब थी चखा गई है
मजे हमे हिटलरशाही के

इस चुनाव के हवन कुड मे
जन मन की ज्वाला लपकी है
आने वाला है जो आगे
यह उस विप्लव की थपकी है
इस चुनाव के हवन कुड से
जन मन की ज्वाला लपकी है

तुनुक मिजाजी नहीं चलेगी

तुनुक मिजाजी नही चलेगी
नही चलेगा जी ये नाटक
सुन लो जी भाई मुरार जी
बन्द करो अपने अब त्राटक

तुम पर बोझ न होगी जनता
खुद अपने दुख-दैन्य हरेगी
हाँ, हाँ, तुम बूढ़ी मशीन हो
जनता तुमको ठीक करेगी

बदतमीज हो बदजुबान हो
इन बच्चो से कुछ तो सीखो
सबके ऊपर हो अब प्रभु जी
अकड़ू मन जैसा मत दीखो

नही किसी को रिझा सकेंगे
इनके नकली लाड प्यार जी
अजी, निछावर कर दूगा मैं
एक तरुण पर सौ मुरार जी

नेहरू की पुत्री तो क्या थी !
भस्मासुर की माता थी वो
अब भी है उसको मुगालता
भारत भाग्य विधाता थी वो

सच सच बोलो, उसके आगे
तुम क्या थे भाई मुरार जी
सूखे-रूखे काठ सरीखे
पड़े हुए थे निराकार जी

तुम्ह छू दिया तरुण क्राति ने
लोकशक्ति का धी रग-रग म
अब तुम लहरा पर सवार हो
विस्मय फैल गया है जग मे

कोटि कोटि मत आहुतिया मे
खालिस स्वण ममान ढले हो
तुम चुनाव के हवन कुड स
अग्नि पुरुष जैसे निकले हो

तरुण हिंद के शासन का रथ
खीच सकोगे पाच साल क्या ?
जिद्दी हो परले दरजे के
खाओगे सौ सौ उबाल क्या !

क्या से क्या तो हुआ अचानक
दिल का शतदल कमल खिल गया
तुमको तो प्रभु एक ज म म
सौ ज मो का सुफल मिल गया

मन ही मन तुम किया करो, प्रिय
विनयपत्रिका का पारायण
अपनी तो खुलने वाली है।
फिर से शायद वो कारायण

अभी नही ज्यादा रगडूगा
मौज करो भाई मुरार जी !
सक्ट की वेला आई तो
मुझ को भी लेना, पुकार जी ?

1977

कब होगी इनकी दीवाली ?

उसका मुक्तिपर्व कब होगा ?
कब होगी उसकी दीवाली ?
चमकेगी उसके ललाट पर
कब ताजे कुकुम की लाली ?

अरे, अरे, छै वर्ष हो गये,
उसे मिलेगा कब छुटकारा ?
वो बन्दी है वो 'नक्सल' है,
मन का तगडा, तन का हारा !

भले जनों की बडे बडों की
राजनीति का वो अछूत है !
दलित निपीडित मानवता का
वो प्रतिनिधि है अग्रदूत है !

उसे सुनेगी कौन हकूमत ?
कौन मुकदमे वापस लेगी ?
कब वैसी सरकार बनेगी
जो उसको छुटकारा देगी ?

जिनके शोणित की लाली से
लाख लाख मुख कमल खिले है,
सच बतलाओ भाई यू ही
उनको क्या इन्साफ मिले है ?

क्या कसूर था बचारे का ?
क्यो अचार सा सीझ गया वो ?
मिलना जुलना छोड दिया है,
एक एक पर खीझ गया वो !

हवी सीखचा के अन्दर से
दुबला पतला हाथ हिला तो।
जी हाँ ठीक ठाक हूँ—मानो
गूँगे का सकेत मिला तो।

मैं बदी 'सम्पूर्ण क्रांति' का
भोग रहा था मिसा'-सुलभ सुख
इच्छा थी नक्सल बदी का
देखूगा सकल्प सुदृढ मुख

मुच्छड रोबीला, वर्दीधर
पहरू था यमदूत सभाई।
चाहे कुछ हो मुझ बूढ़े पर
उसको कुछ भी दया न आई।

वो भी इगित म ही बोला
हाथ हिला फिर डडा वाला
'साहब चले गये हैं आकर
लगवा दूगा अब मैं ताला

लूट मचाई' रेप किया है
कतल किया है, यह खूनी है
देखो फिर भी इन सुसरा की
चर्चा कैसी दिन दूनी है ?

बाबा आप बड़े भोले हो।
इनको दगा दन आये
ये तो इस सन्ट्रल कारा म
जान हमारी लेन आये।

पता चला व सात जन थ
जान बन्द म यहाँ पडे थे।
गातो के साना नक्सल थे
अपन हक के लिए लडे थ।

सातो के मातो चमार थे
अति दरिद्र थे, भूमिहीन थे
करते थे मेहनत मजदूरी
मालिक लोगो के अधीन थे

भूमि-हरण बर्दाशत कर गये
चुप्पी साधी मार पीट पर
गुस्सा तब भडका, बहुओ की
इज्जत जब लूटी घसीट कर

फिर तो व सातो के सातो
बन भेडिया, बाघ हो गये
पुरखे तक धरती पर उतरे
जनम-जनम के पाप धो गये

धरती ने आधार दिया है
सूरज न दी है गरमाई !
इनकी गति स पवन त्रस्त है
फुर्ती मे बिजली शरमाई

लील सकेगा इन्हे न कोई
इनको कौन पचा पाएगा ?
निज तिकडम से इनके बल की
शादी कौन रचा पाएगा ?

इनकी प्रतिध्वनियो से कारा—
की दीवारे हिल हिल जाए !
आओ इन बदी वीरो के
स्लोगन वे हम भी दुहराए

फौलादी सकल्पा वाले
इनका युग, समझो, आया ही
मल-कुड मे सीझ-सीझकर
रुग्ण हुई है बस काया ही

ढकी सीखचो के अन्दर स
दुबला पतला हाथ हिला तो।
जी हा, ठीक ठाक हूँ—मानो
गूगे का सकेत मिला तो।

मैं वदी 'सम्पूर्ण क्रांति' का
भोग रहा था मिसा-सुलभ सुख
इच्छा थी 'नक्सल' बदी का
देखूगा मकल्प सुदढ मुख

मुच्छड रोवीला वर्दीधर
पहरू था यमदूत सभाई।
चाहे कुछ हो मुझ बूढे पर
उसको कुछ भी दया न आई।

वो भी इगित म ही बोला
हाथ हिला फिर डडा वाला
साहव चल गये है आकर
लगवा दूगा अब मैं ताला

लूट मचाई' रेप किया है
कतल किया है यह सूनी है
देखो फिर भी इन सुसरा की
चर्चा कभी ि्न दूनी है ?

बाबा आप बडे भोले हो।
इनको दर्शन देन आये
ये तो इस सन्ट्रल कारा म
जान हमारी लेन आये।

पता चला व सात जन थे
जान कर म यहाँ पडे थ।
खाना व खाना 'नक्सल' थे
अपन हक क लिए लडे थ।

साता के साता चमार थे
अति दरिद्र थे, भूमिहीन थे
करते थे मेहनत मजदूरी
मालिक लोगो के अधीन थे

भूमि हरण बर्दाशत कर गये
चुप्पी साधी मार-पीट पर
गुस्सा तब भडका, बहुओ की
इज्जत जब लूटी घसीट कर

फिर तो वे सातो के सातो
वन भेडिया बाघ हो गये
पुरखे तक धरती पर उतरे
जनम-जनम के पाप धो गये

धरती ने आधार दिया है
सूरज ने दी है गरमाई !
इनकी गति से पवन त्रस्त है
फुर्ती से बिजली शरमाई

लील सकेगा इन्हे न कोई
इनको कौन पचा पाएगा ?
निज तिकडम स इनके बल की
शादी कौन रचा पाएगा ?

इनकी प्रतिध्वनियो से कारा—
की दीवारें हिल हिल जाए !
आओ इन बदी वीरो के
स्लोगन वे हम भी दुहराए

फौलादी सकल्पो वाले
इनका युग, समझो, आया ही
खेल-कूद म सीझ-सीझकर
क्षीण हुई है बस काया ही

बाल बाल बचा हूँ मैं तो

भारी भरकम कलेवर था—
सगठन काग्रेस वाले, अधेड, लोक सभाई बोने
'मैं तो बाल-बाल बचा हू
मीसा मे आते-आत वर्ना
आपकी तरह
मैं भी ग्यारह महीने
हवा खा जाता कृष्ण मदिर की ''

और
जरा झुककर
अपने होठो को इस कान के बिल्कुल करीब ले आए
बाबू अमुकेश्वर प्रसाद नारायण सिंह
बडी बडी आखें फैलाकर फुसफुसाए—
'बाबाजी, आपकी तो खैर जेनुइन बीमारी थी
ऐन वक्त पर जोरा से उभर आई
छुटकारा दिला बैठी
हाईकोट को हिला दिया न आखिर !
मगर मेरी तो लाश ही बाहर आती ऽऽ
मुझ गरीब को वहा कुच्छो नही होता
मैं तो काली गुफाओ की उस दुनिया मे
अचार ही बन जाता
हा बाबाजी, बाबा विश्वनाथ की कृपा से
मैं तो बाल-बाल बचा हू
'मिसा' मे धरते धरात
वर्ना आपकी तरह
नो नो, एक्सक्यूज मी,

इनकी उर उप्मा म अब य
जेल मेल सब गल जाएगे
प्रवचिता के कोपानल म
सौ कुबर भी जल जाएँग

नता वाले निजी वाड म
सोच रहा था ठडे दिल स
आय है सम्पूण क्रांति मे
ताड बना लेंगे हम तिल से

किस मुह से भेजू मैं उन तक
अपनी-खीर, मिठाइ अपनी
सोचा सोचा, फिर फिर सोचा
शरमा गई ढिठाइ अपनी।

इनका मुक्ति पव कब होगा ?
कब होगी इनकी दीवाली ?
चमकेगी इनके ललाट पर
कब ताजे कुकुम की लाली ?

1976

बाल-बाल बचा हूँ मैं तो

भारी भरकम कलेवर था—
सगठन काग्रेस वाले, अधेड, लोक सभाई बोले
"मैं तो बाल-बाल बचा हू
मीसा म आते-आते वर्ना
आपकी तरह
मैं भी ग्यारह महीने
हवा खा आता कृष्ण मदिर की "

और
जरा झुककर
अपने होठो को इस कान मे बिल्कुल करीब ले आए
बाबू अमुकेश्वर प्रसाद नारायण सिह
बडी बडी आखें फैलाकर फुसफुसाए—
'बाबाजी, आपकी तो खैर जेनुइन बीमारी थी
ऐन वक्त पर जोरा मे उभर आई
छुटकारा दिला बैठी
हाईकोट को हिला दिया न आखिर !
मगर मेरी तो नाश ही बाहर आती ऽऽ
मुझ गरीब को वहा कुच्छो नही होता
मैं तो काली गुफाओ की उस दुनिया मे
अचार ही बन जाता
हाँ बाबाजी, बाबा विश्वनाथ की कृपा से
मैं तो बाल-बाल बचा हू
'मिसा मे धरते धरात
वर्ना आपकी तरह
ना नो, एक्सक्यूज मी,

वना राजनाराएन की तरह
तराशी हुई दाढी वाल उस 'यग टक' की तरह
जान कहा पडा रहता
जान किस हालत म छीजता रहता

1976

नये-नये दिल है

नय नये दिल है
नये नये मन
नयी नयी जतिया
नये नये जन
नया नया नया नया, नया नया
जन मन है, जन मन है जन मन
ताजा है यह जन मन
टटका है यह जन मन
पुलकित है धरती का कन-कन
सब कुछ है नया नया, सभी कुछ नूतन

बस हुआ
नही किसी एक का करना अब पूजन
नही किसी एक का करना आराधन
बस हुआ, सुन लिए देवी देवा के भजन
देख ली आरती, जल गए कपूर, हजार हजार मन
बस हुआ
देख लिए हिटलरी पूतो के
उछल कूद मार काट आस्फालन
बस हुआ
बस हुआ
बम हुआ
नही किसी एक का करना अब पूजन

देखना,
दुष्टो को क्षमा नही करना
देखना,
शतान निकलने न पाए बेदाग

देखना,
बुझने नहीं पाए,जन मनकी आग
देखना।

रहा उनके बीच मैं

रहा उनके बीच मैं ।
था पतित मैं, नीच, मैं

दूर जाकर गिरा, बेबस उडा पतझड मे
धस गया आकठ कीचड मे
सडी लाशें मिली,
उनके मध्य लेटा रहा आखें मीच, मैं
उठा भी तो झाड आया नुक्कडा पर स्पीच, मैं ।
रहा उनके बीच मैं ।
था पतित मैं, नीचे मैं ।।

1976

परेशान हैं काग्रेसी

पटना दिल्ली भटक रहे हैं परेशान है काग्रेसी
कम्म कम्म प अटक रहे है परेशान है काग्रेसी
बिगड रहे है बात बात पर, परेशान हैं काग्रेसी
नीद न आती रात रात भर परेशान हैं काग्रेसी

बिगड चुके है नाती पोत परेशान है काग्रेसी
बाहर हसते अन्दर रोते परेशान है काग्रेसी
खाना-पीना भूल गए है परेशान है काग्रेसी
यू ही फासी झूल गए है परेशान है काग्रेसी

देवी को डायन कहत ह परेशान है काग्रेसी
ज्यादातर गुमसुम रहते है, परेशान हैं काग्रेसी
सारा नाटक भूल गया है परेशान है काग्रेसी
सिर का गूदा फूल गया है, परेशान हैं काग्रेसी

बदला थान का दारोगा परेशान हैं काग्रेसी
जान अब क्या न क्या होगा परेशान हैं काग्रेसी
कुल जनता फासिस्ट हो गयी परेशान हैं काग्रेसी
इनकी तो पहचान खो गई, परेशान हैं काग्रेसी

भारी सजा मिली है इनको, परेशान हैं काग्रेसी
तारे अब दिखत हैं दिन को, परेशान हैं काग्रेसी
इनके बदले कज भरो जी, परेशान हैं काग्रेसी
आओ, इन पर रहम करो, जी परेशान हैं काग्रेसी

आय-बाय बकत फिरत हैं परेशान हैं काग्रेसी
पग-पग पे यू ही गिरत है, परेशान हैं काग्रेसी
कम्युनिस्ट तक दगा दे गए परेशान हैं काग्रेसी
अपन बाहर भगा ल गए परेशान है काग्रेसी

हरिजन तक अब दूर भागते, परेशान ह काग्रेमी
फिर भी आठो पहर जागते, परेशान है काग्रेमी
अरुचि हो गई योगासन से, परेशान हैं काग्रेमी
उतर चुके हैं जन-गण मन मे, परेशान हैं काग्रेसी

जे० पी० अब 'सम्पूण स त' है, परेशान ह काग्रेसी
बाकी सब 'घाघा बसत है परेशान हैं काग्रेमी
'इन्द्रा' डटकर बाहर आई, परेशान ह काग्रेसी
बेलछी पहुची 'जनता माई , परेशान हैं काग्रेसी

1976

जनता वाले परेशान हैं

जनता वाने परेशान है तन मत्र स त्राटक से,
जनता वाले परेशान है दवीजी के नाटक स
जनता वाने परेशान हैं नइ नई हडताला स
जनता वाल परेशान ह R S S वाला स

जनता वाले परशान है अपन ही उन वादो से
जनता वाले परेशान है बापूजी की यादा से
जनता वाले परशान है जन जन की अगडाई से
जनता वाले परशान हैं दिन दिन की महगाई से

जनता वाने परेशान है निजी सिफारिश वाला से
जनता वाले परेशान ह चिकन चुपडे गाला स
जनता वाले परेशान है कोटि कोटि बेकारा स
जनता वाले परेशान है ताज ताजे नारा स

जनता वाल परेशान है बूढो की चतुराई से
जनता वाले परेशान है उसी इदिरा ताई स
जनता वाले परशान है अपनी मूत पियें कैस
जनता वाले परशान है नब्वे माल जिए कस

जनता वाले परेशान है पूरब दक्खिन पच्छिम स
जनता वाले परेशान है हरिजन गिरिजन मुस्लिम स
जनता वाले परेशान हैं खालिम भगवा भण्डा स
जनता वाले परेशान हैं शाखावाले डडा स

जनता वाले परेशान है अति जोशीले नारा स
जनता वाल परेशान हैं मालाआ जयकारा स
जनता वाले परेशान हैं अपन और पराया से
जनता वाले परेशान हैं जमनापारी गाया स

जनता वाले परेशान हैं छात्र नही चुप रहते हैं
जनता वाले परेशान हैं दिल की कभी न कहते हैं
जनता वाले परेशान हैं पता नही है बीमारी का
जनता वाले परेशान है भेद नही है नर नारी का

जनता वाले परेशान है मुटा रही नौकरशाही
जनता वाले परेशान हैं भटक गए फिर से राही
जनता वाले परेशान है नजर लगी फिर डायन की
जनता वाले परेशान हैं इनको पडी रसायन की

जनता वाले परेशान है खींच-तान का आलम है
जनता वाले परेशान है, सीध-सामने पालम है
जनता वाले परेशान है, सबको खुश रक्खें कैसे
जनता वाले परेशान हैं, सत्ता सुख चक्खें कैसे

जनता वाले परेशान है जन जन हसता है फिर भी
जनता वाले परेशान है शासन चलता है फिर भी
जनता वाले परेशान है, नफाखोर मुसकाता है
जनता वाले परेशान हैं, कुछ न समझ मे आता है

1977

जरासन्ध

पतन और विच्युति-विभ्रम का जरासध है
लाभ-लोभ की सीमाओ म नही अ ध ह
वुद्धि भेद के बीज भरे ह इसके अ दर—
महानाश के भस्मासुर का यह क ध है
तेवर तो हैं छद्म वाम के—
दक्षिणपथी भोग भाग की विकट गध हे
पतन और विच्युति विभ्रम का जरास ध है

1975

सदाशय बन्धु

शासन के खिलाफ
ऐसी उत्कट रचना सुनाकर
कर दिया मैंने पैदा
बहुतेरे 'भद्र' लोगों के सिर दर्द
दिमाग ने कहा वाह रे मैं! वाह रे मद
लेकिन सहानुभूति में पडकर दिल हो उठा मद
हो आए घने करुणा के भाव
दया आई उन भले-मानसों पर
फिर तो मैंने सुना ही उन्हें सस्वर
ढेर-सारी नरम नरम शीतल रचनाएं
कि बेचारे 'सदाशय' बन्धु सही सलामत वापस तो जाएं!

1975

थकित चकित भ्रमित भग्न मन

थकित-चकित-भ्रमित-भग्न मन को
स्फूर्ति देता है किसी समर्थ का सहारा
तो क्या मुझे भी प्रभु की सत्ता स्वीकारनी होगी
तो क्या मुझे भी आस्तिक बन जाना होगा ?

सुख सुविधा और ऐश-आराम के साधन
डाल देते हैं दरार प्रखर नास्तिकता की भीत में
बड़ा ही मादक होता है यथास्थिति का शहद
बड़ी ही मीठी होती है 'गतानुगतिकता' की संजीवनी

धर्मभीरु पारम्परिक जन समुदायों की
बूंद बूंद संचित श्रद्धा के सौ सौ भांड
जमा हैं जमा होते रहेंगे
मठों के अन्दर
तो क्या मुझे भी बुढ़ापे में 'पुष्टई' के लिए
वापस नहीं जाना है किसी मठ के अन्दर ?

1975

नये सिरे से

नये सिरे स
घिर घिरे से
हमन झेने
तानाशाही के वे हमले
आगे भी झेलें हम शायद
तानाशाही के वे हमले   नये सिरे मे
घिरे-घिरे मे
"बदल-बदल कर चखा करे तू दुख-दर्दों का स्वाद
"शुद्ध-स्वदेशी तानाशाही आए तुझको याद
"फिर फिर तुझको हुलसित रक्खे अपना ही उन्माद
'तुझे गर्व है, बना रह तू अपना ही अपवाद

1977

धोखे मे डाल सकते हैं

हम कुछ नही है
कुछ नही है हम
हा, हम ढोगी हैं प्रथम श्रेणी के
आत्मवचक पर-प्रतारक वगुला धर्मी
यानी धोखेबाज
जी हा, हम धोखेबाज हैं
जी हा, हम ठग हैं झुटठे है
न अहिंसा मे हमारा विश्वास है
न हिंसा मे हमारा विश्वास है
मन, वचन, कम हमारा कुछ भी स्वच्छ नही है
हम किसी की भी 'जय' बोल सकते हैं
हम किसी को भी धोखे मे डाल सकते हैं

1975

खूब सज रहे

खूब सज रहे आगे-आगे पडे
मरो पर लिए गैस के हडे
वडे वडे रथ, बडी गाडिया, बडे-बडे है झडे
बाहो मे तावीजें चमकी, चमके काले गडे
सौ-सौ ग्राम वजन है, कछुआ ने डाले हैं अण्डे
बढे आ रहे, चढे आ रहे, चिकमगलूरी पडे
बुढिया पर कैसी फबती है दस हजार की सिल्कन साडी
उफ, इसकी बकवास सुनेंगे लाख-लाख बम्भोले अनाडी
तिल-तिलकर आगे खिसकेगी प्रजातत्र की खच्चर-गाडी
पूरब, पश्चिम, दक्खिन, उत्तर, आसमान मे उडे कबाडी

1978

हाय अलीगढ

हाय, अलीगढ !
हाय, अलीगढ !
बोल, बोल, तू ये क्स दगे हैं
हाय, अलीगढ !
हाय, अलीगढ !
शांति चाहते, सभी रहम के भिखमगे है
सच बतलाऊ ?
मुझको तो लगता है प्यार,
हुए इकटठे इत्तिफाक से, सारे ही न ो हैं
सच बतलाऊ ?
तेरे उर के दुख दरपन म
हुए उजागर
सब कोढी भिखमगे हैं
फिक्र पडी बस अपनी अपनी
बडे बोल है
ढमक ढोल है
पाच स्वाथ हैं पाच दला के
हदें न दिखती कुटिल चालकी
ओर छोर दिखते न छलो के
बत्तिस चौंसठ मनसूबे हैं आठ दला क

1978

नुक्कड जिंदाबाद

बडी मुश्किल है
इनसे बच के चलना फिरना
बडी मुश्किल है
इनके दरमियान रहना, खुल के सास लेना
बडी मुश्किल है
इनको खुश करना
इनकी खुशियों को बरकरार रखना
बडी मुश्किल है
इनकी कुटिलताए परखना
बडी मुश्किल है
जी हा, बडी मुश्किल है
जी हा, बार-बार इन्होने मेरे नबर काटे है
जी हा उन्होने भी !
और जी हा, उन्होने भी !
अजी हा, उन्होने भी, जी हा
ओफ्फोह ! जाने कैसे आज
आपस म वे एक प्राण एक दिल हो गये है
ओफ्फोह ! जाने कैसे वे आज
एक दूसरे का गुह्य अग सूघ रहे है
ओफ्फोह ! जाने कैसे वे आज
परितृप्ति की गहरी सास ले रहे है

चलो, अच्छा है
मैं अलग ही खडा रहूँगा
चौराहे का यह नुक्कड जिंदाबाद !

1977

देवरस दानवरस

देवरस दानवरस
पी लेगा मानव रस
होंगे सब विकृत विरस
क्या षट्‌रस, क्या नवरस
होंगे सब विजित विवश
क्या तो तीव्र क्या तो ठस
देवरस दानवरस
पी लेगा मानव रस

सर्वग्रास सर्वत्रास
होगा अब इतिहास
फैलायेगा उजास
पशु-विप्लव पशु विलास
जन लक्ष्मी अति उदास
छोड़ेगी बस उसास
चरेगी हरी घास
संस्कृति की गलित लाश

कूड़ा के आस-पास
ढूंढेंगे प्रात-राश
ग्रामदास-नगरदास
देखेगा जग विकास
अत्योदय-अ त्यनाश
होगा अब इतिहास
सर्वत्रास सर्वग्रास

1978

नित नये मिलन हैं

नित नये मिलन हैं पुराने यारो के
घिनौने इगिन हैं रगे सियारो के
दिखावा है, छल है
मल ही मल है
हल्ला है, शोर है हुआ हुआ है
कुआ है, धुआ है, कदम कुआ है
इधर नही बढना—
विक्षुब्ध नौजवानो, होशियार !
इधर नही बढना—
कुपित श्रमिको, किसानो, होशियार !
इधर नही बढना—
चमहार भूमिहीनो, होशियार !
इधर नही बढना—
दुखियारे गमगीनो, होशियार
भ्राति का कुहासा ह इस ओर
भ्राति का धुआं है इस ओर
कदमकुआं है इस ओर

1978

आए दिन

आए दिन
अरब अ चला के तेली धन-कुबेरा को
दिन रात आती रहती है
डालरा की अपच से राट्टी डकारें
आए दिन
तीव्र उडान वाले विमाना से पहुँचते रहते है वहाँ
लदन के वडे वडे डॉक्टर
अमीरा की चिकित्सा करत है मुस्तैदीपूवक
कदम-कदम पर काम आता है नाम
मिलता है हाथा की सफाइ का अधिक स अधिक दाम
आए दिन

आए दिन
कोटिपति, युवक या अधेड पूजीपुत्र
छिप छिप कर सेवन करता है
सिंगी और भागुर मछलियाँ
तरुण बकरे की कलजिया
आए दिन
यह सब दख-सुनकर
अत्यधिक पुलकित हो उठता है
यह वनमानुम
यह सत्तर साला उजवक
उमग मे भरकर सिर के वाल

नोचने लग जाता है यह व्यक्ति
अपने ही सिर के बाल
अचानक बजाने लग जाता है सीटियाँ
आए दिन

1976

हम विभोर थे अगवानी मे

हम विभोर थ अगवानी मे
तुमने तो नख दत दिखाए ।
हम तो कुछ भी सीख न पाए
तुमने कैस पाठ सिखाए ।

सतरगी वो सिल्कन झूले
डाले हमन लाट-नाट पर
देखो, व दनवार सजाए
चौराहो पर घाट घाट पर

तुम आका हो, तुम मालिक हो
दुनिया भर के महाजनो का
उतरे थे तुम इस धरती पर
भाग्य जगान अकिचना का

हम तो भारी बुद्धू निकले
अपना सौदा पटा न पाए
रिझा न पाए ज्यादा तुमको
तुमको ज्यादा सटा न पाए

छोडे अडियल हिदुस्तानी
क्याकर गाधी-नहरू का पथ
अजी, वाहजी, विश्व विजेता
लौट गए हो विफल मनोरथ

वहाँ, तुम्हारी बगिया म तो
'यूद्रन-बम के फल लटके हैं
अणु-ऊर्जा की बढ़ोत्तरी म
यहाँ तुम्ह लगत झटके हैं

हमें नही चाहिए मसानी—
माता का बारूदी आंचल
जाओ, भस्मासुरी नृत्य का
कही और ही करो रिहर्सल—

1977

पुलिस आगे बढी

चन्दन का चर्खा निछावर है इस्पाती बुलेट पर
निछावर है अगरबत्ती चुरूट पर, सिग्रेट पर
नफाखोर हँसता है सरकारी रेट पर
पलाई करो दिन रात, लात मारो पब्लिक के पेट पर

पुलिस आगे बढी—
क्रांति को सम्पूर्ण बनाएगी
गुमसुम है फौज—
वो भी क्या आजादी मनाएगी
बज गई घिग्घी—
माथे मे दर्द हुआ
नंगे हुए इनके वायदे—
नाटक ये पर्द हुआ !

मिनिस्टर तो फूँकेंगे अधाधुंध रकम
सुना करेगी अवाम बक बक-बकम
वतन चुकाएगा जहालत की फीस
इन पर तो फबेगी खादी नफीस

धंधा पालिटिक्स का सबसे चोखा है
बाकी तो ठगैती है बाकी तो धोखा है
कंधा पर जो चढा, वो ही अनोखा है
हमने कबीर का पद ही तो छोखा है

1978

हरिजन-गाथा

एक

ऐसा तो कभी नहीं हुआ था!
महसूस करने लगीं वे
एक अनोखी बेचैनी
एक अपूर्व आकुलता
उनकी गर्भकुक्षियों के अन्दर
बार-बार उठने लगीं टीसें
लगाने लगे दौड़ उनके भ्रूण
अन्दर ही अन्दर
ऐसा तो कभी नहीं हुआ था

ऐसा तो कभी नहीं हुआ था कि
हरिजन माताएं अपने भ्रूणों के जनकों को
खो चुकी हों एक पैशाचिक दुष्काण्ड में
ऐसा तो कभी नहीं हुआ था

ऐसा तो कभी नहीं हुआ था कि
एक नहीं दो नहीं, तीन नहीं—
तेरह के तेरह अभागे—
अकिंचन मनुपुत्र
जिन्दा झोंक दिये गये हों
प्रचण्ड अग्नि की विकराल लपटों में
साधन सम्पन्न ऊंची जातियों वाले
सौ सौ मनुपुत्रों द्वारा![1]
ऐसा तो कभी नहीं हुआ था

ऐसा तो कभी नहीं हुआ था कि

खबरें पहुँचा दी गई हो सभावित दुर्घटनाओं की

और, निरतर कई दिनो तक
चलती रही हो तैयारियाँ सरे आम
(किरासिन के कनस्तर, मोटे-मोटे लक्कड
उपलो के ढेर सूखी घास फूस के पूले
जुटाये गये हो उत्साहपूर्वक)
और एक विराट चिताकुड के लिए
खोदा गया हो गड्ढा हँस हँस कर
और ऊची जातियो वाली वो समूची आबादी
आ गई हो होली वाले 'सूपर मौज' के मूड मे
और, इस तरह जिन्दा झोक दिए गए हो

तेरह से तेरह अभागे मनुपुत्र
सौ सौ भाग्यवान मनुपुत्रो द्वारा
ऐसा तो कभी नही हुआ था
ऐसा तो कभी नही हुआ था

दो

चकित हुए दोनो वयस्क बुजुर्ग
ऐसा नवजातक
न तो देखा था, न सुना ही था आज तक!
पैदा हुआ है दस रोज पहले अपनी बिरादरी मे
क्या करेगा भला आगे चलकर?
रामजी के आसरे जी गया अगर
कौन सी माटी गाडेगा?
कौन सा ढेला फोडेगा?
मग्गह का यह बदनाम इलाका
जाने कैसा सलूक करेगा इस बालक से
पैदा हुआ है बेचारा—
भूमिहीन बधुआ मजदूरो के घर मे
जीवन गुजारेगा हैवान की तरह

भटकेगा जहा तहा वनमानुस जैसा
अधपेटा रहेगा अधनगा डोलेगा
तोतला होगा कि साफ-साफ बोलेगा
जाने क्या करेगा
बहादुर होगा कि बेमौत मरेगा
फिक्र की तरैया मे खाने लगे गोत
वयस्क बुजुर्ग लोग, एक ही बिरादरी के हरिजन
सोचने लगे बार-बार
कम तो अनोखे हैं अभागे के हाथ पैर
राम जी ही करेंगे इसकी खैर
हम क्या जानेंगे, हम ठहरे हैवान
देखा तो कैसा मुलुर मुलुर देख रहा शैतान !
सोचते रहे दोनो बार-बार

हाल ही मे घटित हुआ था वो विषाद दुष्काड
भोक दिये गये थे तेरह निरपराध हरिजन
सुसज्जित चिता मे

यह पैशाचिक नरमेध
पैदा कर गया है दहशत जन-जन के मन म
इन बूढो की तो नीद ही उड गई है तब से !
बाकी नही बचे हैं पलको के निशान
दिखते हैं दगो के कोर ही कोर
देती है जब-तब पहरा पपोटो पर
सील मुहर सूखी कीचड की

उनम स एक बोला दूसर से
बच्चे की हथेलियो के निशान
दिखलायेंगे गुरु जी स
वो जरूर कुछ न कुछ बतलायेंगे
इसकी किस्मत के बारे म

देखा तो ससुर के कान ह कैस लम्बे
आखें ह छोटी पर कितनी तेज ह

कसी तज रोशनी फूट रही है इन स ।
सिर हिलाकर और स्वर खीच कर
बुद्धू न कहा—
हा जी खदरन, गुरु जी ही देखेंगे इसको
बतायेंगे वही इस कलुए की किस्मत के बार म
चलो, चलें, बुला लावें गुरु महाराज को

पास खडी थी दस साला छोकरी
ददद्दू के हाथा स ले लिया शिशु को
सभल कर चली गई झोपडी के अन्दर

अगले नही उससे अगले रोज
पधारे गुर महाराज
रदासी कुटिया के अधेड सत गरीबदास
बकरी वाली गगा जमनी दाढी थी
लटक रहा था गले से
अगूठानुमा जरा सा टुकडा तुलसी काठ का
कद था नाटा सूरत थी सावली
कपार पर, बाइ तरफ घोड के खुर
का निशान था
चेहरा था गोल मटोल, आखें थी घुच्ची
बदन कठमस्त था
एसे आप अधेड सत गरीबदास पधारे
चमर टोली म

अरे भगाओ इस बालक को
होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटाएगे धरती स
इसके साथी और सघाती

'यह उन सबका लीडर होगा
नाम छपेगा अखबारा मे
बडे-बडे मिलने आएग
लद लद कर मोटर कारा म

'खान खोदने वाले सौ-सौ
मजदूरो के बीच पलेगा
युग की आँचा मे फौलादी
साचे-सा यह वही ढलेगा

'इसे भेज दो झरिया फरिया
मा भी शिशु के साथ रहेगी
बतला देना, अपना असली
नाम पता कुछ न कहेगी

'आज भगाओ, अभी भगाओ
तुम लोगो को मोह न घेरे
होशियार, इस शिशु के पीछे
लगा रहे हैं गीदड फेरे
'बडे बडे इन भूमिधरो को
यदि इसका कुछ पता चल गया
दीन-हीन छोटे लोगो को
समझो फिर दुर्भाग्य छल गया

'जनबल धनबल सभी जुटेगा
हथियारो की कमी न होगी
लेकिन अपने लेखे इसको
हप न होगा, गमी न होगी

'सब के दुख में दुखी रहेगा
सबके सुख म सुख मानेगा
समझ-बूझ कर ही समता का
असली मुद्दा पहचानेगा

'अरे देखना इसके डर स
थर थर कापेंगे हत्यारे
चोर उचक्के-गुडे डाकू
सभी फिरेंगे मारे-मारे

'इसकी अपनी पार्टी होगी

सोच रहा था—इस गरीब ने
सूक्ष्म रूप म विपदा झेली

आडी तिरछी रखाआ मे
हथियारा के ही निशान है
खुखरी है, बम है, असि भी है
गडासा भाला प्रधान हैं

दिल ने कहा—दलित माआ के
सब बच्चे अब बागी होंगे
अग्निपुत्र हागें वे, अतिम
विप्लव मे सहभागी हागे
दिल न कहा—अर यह बच्चा
सचमुच अवतारी वराह ह
इसकी भावी लीलाआ का
सारी धरती चारागाह है

दिल न कहा—अर हम तो बस
पिटते आए, रोते आए।
बकरी के खुर जितना पानी
उसम सौ सौ गोत खाए।

दिल न कहा—अर यह बालक
निम्न वग का नायक होगा
नई ऋचाआ का निमाता
नये वद का गायक होगा

होगे इसके सौ सहयोद्धा
लाख-लाख जन अनुचर हाग
होगा कम वचन का पक्का
फोटो इसके घर घर हागे

दिल न कहा—अरे इस शिशु को
दुनिया भर मे कीर्ति मिलगी

वेचारी सुखिया जमे तैस पान ही लेगी इसको
मैं तो इस साल सान देख आया करूगा
जब तक है चलन फिरने की ताकत घोन म
तो क्या आगे भी इस बनुए के लिए
भेजत रहगे खर्ची गुरु महराज ?

बढ आया बुद्धू अपन छप्पर की तरफ
नाचत रह लकिन माथ क अदर
गुरु महाराज के मुह स निकले हुए
हथियारा के नाम और आकार प्रकार
खुखरी भाला, गडासा, बम, तलवार
तलवार, बम, गडासा, भाला, खुखरी

1977